ISLAM
THE CURSE TO
HUMANITY
Complete Guide for Kaafirs
YOGESH GURJAR

भूमिका / Preface

किसी भी मत (Sect) या मजहब (Religion) को जानने के लिए उसकी मजहबी अथवा धार्मिक पुस्तक पढ़ना जरूरी है। इसी से उसकी विचारधारा और सिद्धांतो का पता चलता है की आखिर ये मजहब इसके मानने वालो को क्या शिक्षा देता है , किसी भी मत मजहब की दी गई शिक्षा और उसके सिद्धांतो के आधार पर हम उस मजहब के मानने वालो की मानसिकता को जान सकते है।

इसी कड़ी में आज हम इस्लाम का विस्तार पूर्वक परिचय इस पुस्तक में पड़ेंगे और इस्लाम की क्या शिक्षाएं है इससे आम जन मानस को अवगत कराएंगे।

हम इस पुस्तक में प्रत्येक बात प्रमाणों सहित लिखेंगे कोई भी बात अप्रमाणिक नही होगी पाठक स्वयं तथ्यों को cross Check कर सकते है। पुस्तक की भाषा व लेखनी को सरल रखा गया है जिससे आम लोग भी इसे समझकर ज्ञानवर्धन कर पाएंगे।

आशा करते है की आपको यह पुस्तक पसंद आएगी और इसमें दी गई जानकारी आपके काम आयेगी।

विषय सूची

इस्लामिक शब्दो का परिचय

- अल्लाह – मुसलमानो का खुदा (God)
- कुरान – अल्लाह द्वारा भेजी गईं किताब
- पैगम्बर – अल्लाह का भेजा गया दूत (Messenger)
- मोहम्मद – अल्लाह का अंतिम पैगम्बर अथवा नबी (जिसे अल्लाह ने पुस्तक नाजिल करी / भेजी हो)
- सहाबा – पैगम्बर के साथी
- हदीस – मोहम्मद व उसके साथियों से जुड़ी शिक्षाएं एवं इतिहास

इस्लाम को जानने के प्रमुख स्रोत (Sources)

मुसलमान जिस मजहब (Religion) को मानते है उसका नाम है इस्लाम।

इस्लाम को जानने के मुख्य स्रोत है :–

- **कुरान :– इस्लाम की नींव यानी उसकी सर्वमान्य पुस्तक**

- **हदीस :– इनके अंतर्गत कई पुस्तके आती है प्रमुख तीन ये है**

  1. **सही बुखारी / Sahih Bukhari**
  2. **सही मुस्लिम / sahih Muslim**
  3. **इब्न माझा / Ibn Majah**

- शिरा :– मोहम्मद की जीवनी / इब्न ईशाक द्वारा लिखित सर्वमान्य व सर्वप्रथम लिखित

  Biography Of Prophet : -
  Sirat Rasool Allah By Ibn Ishaq

- तफसीर :– कुरान की सप्रसंग व्याख्या

(Explanation Of Quran With Context)

- अल तबरी द्वारा रचित इस्लाम का इतिहास

  History Of Islam By Al Tabri

- इस्लामिक स्कॉलर्स द्वारा दिए गए भाषण एवं लेक्चर्स में।

इस्लाम का उदय / Rise Of islam

इस्लाम का उदय आज से लगभग 1400 साल पहले सऊदी अरब में हुआ इसके संस्थापक का नाम था मोहम्मद

मोहम्मद मक्का में सन 570 में जन्मा था
पिता – अब्दुल्लाह
मां – अमीना
दादा – अब्दुल मुत्तलिब
चाचा – अबु तालिब , अबु लहब

शुरुआत में मोहम्मद आम अरब वासियों की तरह चरवाहा था उसकी पहली शादी 25 वर्ष की उम्र में एक 40 साल की विधवा व धनवान औरत खदीजा से हुई थी।

कुरान का नाजिल होना
Revelation of Quran

इस्लाम के अनुसार कुरान अल्लाह के शब्द है जिन्हे अल्लाह का फरिश्ता जिब्राइल मोहम्मद को सुनाता था। आखिर कुरान कैसे नाजिल होती थी इसे इस हदीस से जाने

Sahih al-Bukhari 2

Narrated 'Aisha:

(the mother of the faithful believers) Al-Harith bin Hisham asked Allah's Messenger (ﷺ) "O Allah's Messenger (ﷺ)! How is the Divine Inspiration revealed to you?" Allah's Messenger (ﷺ) replied, "Sometimes it is (revealed) like the ringing of a bell, this form of Inspiration is the hardest of all and then this state passes off after I have grasped what is inspired. Sometimes the Angel comes in the form of a man and talks to me and I grasp whatever he says." 'Aisha added: Verily I saw the Prophet (ﷺ) being inspired divinely on a very cold day and noticed the sweat dropping from his forehead (as the Inspiration was over).

٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّ الحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ سَأَلَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ! كَيْفَ يَأْتِيكَ ٱلْوَحْيُ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَحْيَانًا يَأْتِينِي مِثْلَ صَلْصَلَةِ ٱلْجَرَسِ، وَهُوَ أَشَدُّهُ عَلَيَّ، فَيَفْصِمُ عَنِّي وَقَدْ وَعَيْتُ عَنْهُ مَا قَالَ، وَأَحْيَانًا يَتَمَثَّلُ لِيَ ٱلْمَلَكُ رَجُلًا، فَيُكَلِّمُنِي فَأَعِي مَا يَقُولُ).

قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: وَلَقَدْ رَأَيْتُهُ يَنْزِلُ عَلَيْهِ ٱلْوَحْيُ فِي ٱلْيَوْمِ ٱلشَّدِيدِ ٱلْبَرْدِ، فَيَفْصِمُ عَنْهُ وَإِنَّ جَبِينَهُ لَيَتَفَصَّدُ عَرَقًا. [رواه البخاري: ٢]

2 : आइशा रजि. से रिवायत है कि हारिस बिन हिशाम रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप पर वहय कैसे आती है? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: कभी तो वहय आने की हालत घंटी की टन टन की तरह होती है और यह हालत मुझ पर बहुत भारी गुजरती है। फिर जब फरिश्ते का पैगाम मुझे याद हो जाता है तो यह बन्द हो जाती है और कभी फरिश्ता इन्सानी शक्ल में मेरे पास आकर मुझ से बात करता है और जो कुछ वह कहता है, मैं उसे महफूज (याद) कर लेता हूँ।'' आइशा रजि. का बयान है कि मैंने सख्त सर्दी के दिनों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब वहय आती तो उसके बन्द होने पर आपकी पेशानी से पसीना फूट पड़ता था।

यहां पर " वहय / वही " का तात्पर्य Revelation / नाजिल होने से है।

उपयुक्त हदीस में मोहम्मद ने बताया है की उसपर कुरान घंटियों की टन टन यानी घंटी बजने के साथ नाजिल होती थी। ठीक उसी तरह जैसे आज आज आपके फोन में कोई मैसेज आने पर उसका Notification आता है।

लेकिन एक हदीस में मोहम्मद ने घंटियों की आवाज को शैतान की आवाज कहा है

Sahih Muslim 2114

Abu Huraira reported Allah's Messenger (may peace be upon him) as saying:

The **bell** is the musical instrument of the Satan.

मतलब घंटी शैतान का वाद्य यंत्र है और मोहम्मद पर जब कुरान नाजिल होती थी तो वो घंटियों की आवाज में भी नाजिल होती थी।

इसका अर्थ तो ये हुआ की कुरान अल्लाह की नही बल्कि शैतान की किताब है।

अब कुरान की पहली आयते (Verses) कैसे और कहा नाजिल हुई ये देखते है।

विशेष बात यह है की कुरान की जो आयते सर्वप्रथम नाजिल हुई थी वे आज कुरान की पहले सूरा (Chapter) की आयते नही बल्कि सूरा 96 की आयते है जिससे पता चलता है की कुरान की आयतों का कोई क्रम (Sequence)
नहीं है।

कुरान अरबी भाषा की किताब है जिसका आज लगभग हर भाषा में अनुवाद हो चुका है।

कुरान में कुल 114 सूरा (Chapters) है।
प्रत्येक सूरा में अनेकों आयत (Verse)है
कुरान में 6000 से भी ज्यादा आयते है

अब कुरान की पहली बार नाजिल होने की घटना देखते है।

जब मोहम्मद की उम्र 40 साल की हुई तब उसे अकेले रहना पसंद आने लगा निम्न हदीस के अनुसार वह वहा स्तिथ " जबल अल नूर " नामक पहाड़ की " हीरा गुफा " में जाने लगा। आगे की कहानी निम्न हदीस में पढ़े ||
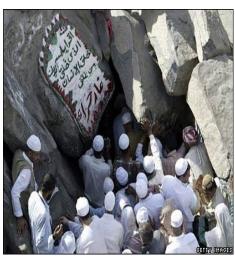
Sahih al-Bukhari 3

Narrated 'Aisha (the mother of the faithful believers):

The commencement of the Divine Inspiration to Allah's Messenger (ﷺ) was in the form of good dreams which came true like bright daylight, and then the love of seclusion was bestowed upon him. He used to go in seclusion in the cave of Hira where he used to worship (Allah alone) continuously for many days before his desire to see his family. He used to take with him the journey food for the stay and then come back to (his wife) Khadija to take his food likewise again till suddenly the Truth descended upon him while he was in the cave of Hira. The angel came to him and asked him to read. The [1]

came to him and asked him to read. The
Prophet (ﷺ) replied, "I do not know how to read." The Prophet (ﷺ) added, "The angel caught me (forcefully) and pressed me so hard that I could not bear it any more. He then released me and again asked me to read and I replied, 'I do not know how to read.' Thereupon he caught me again and pressed me a second time till I could not bear it any more. He then released me and again asked me to read but again I replied, 'I do not know how to read (or what shall I read)?' Thereupon he caught me for the third time and pressed me, and then released me and said, 'Read in the name of your Lord, who has created (all that exists), created man from a clot. Read! And your Lord is the Most Generous." (96.1, 96.2, 96.3) Then

Most Generous." (96.1, 96.2, 96.3) Then
Allah's Messenger (ﷺ) returned with the Inspiration and with his heart beating severely. Then he went to Khadija bint Khuwailid and said, "Cover me! Cover me!" They covered him till his fear was over and after that he told her everything that had happened and said, "I fear that something may happen to me." Khadija replied, "Never! By Allah, Allah will never disgrace you. You keep good relations with your kith and kin, help the poor and the destitute, serve your guests generously and assist the deserving calamity-afflicted ones." Khadija then accompanied him to her cousin Waraqa bin Naufal bin Asad bin 'Abdul 'Uzza, who, during the pre-Islamic Period became a Christian and used to write the writing with Hebrew letters. He would write from the Gospel in Hebrew as much as Allah wished him to write. He was an old man and had lost his eyesight. Khadija said

much as Allah wished him to write. He was an old man and had lost his eyesight. Khadija said
to Waraqa, "Listen to the story of your nephew, O my cousin!" Waraqa asked, "O my nephew! What have you seen?" Allah's Messenger (ﷺ) described whatever he had seen. Waraqa said, "This is the same one who keeps the secrets (angel Gabriel) whom Allah had sent to Moses. I wish I were young and could live up to the time when your people would turn you out." Allah's Messenger (ﷺ) asked, "Will they drive me out?" Waraqa replied in the affirmative and said, "Anyone (man) who came with something similar to what you have brought was treated with hostility; and if I should remain alive till the day when you will be turned out then I would support you strongly." But after a few days Waraqa died and the Divine Inspiration was also paused for a while.

[1] **Reference :– Sahih Bukhari Hadith No. 3**

3 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्य की शुरूआत सच्चे ख्वाबों की शक्ल में हुई, आप जो कुछ ख्वाब में देखते, वह सुबह की रोशनी की तरह नमूदार होता, फिर आप को तन्हाई पसन्द हो गई। चूनांचे आप गारे हिरा में तन्हाई इख्तियार फरमाते और कई कई रात घर तशरीफ लाये बगैर इबादत में लगे रहते। आप खाने पीने का सामान घर से ले जाकर वहां कुछ रोज गुजारते, फिर खदीजा रजि. के पास वापस आते और तकरीबन इतने ही दिनों के लिए फिर कुछ खाने पीने का

٣ : عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ ٱلْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مِنَ ٱلْوَحْيِ ٱلرُّؤْيَا ٱلصَّالِحَةُ فِي ٱلنَّوْمِ، فَكَانَ لَا يَرَى رُؤْيَا إِلَّا جَاءَتْ مِثْلَ فَلَقِ ٱلصُّبْحِ، ثُمَّ حُبِّبَ إِلَيْهِ ٱلْخَلَاءُ، فَكَانَ يَخْلُو بِغَارِ حِرَاءٍ، فَيَتَحَنَّثُ فِيهِ - وَهُوَ ٱلتَّعَبُّدُ - ٱللَّيَالِيَ ذَوَاتِ ٱلْعَدَدِ قَبْلَ أَنْ يَنْزِعَ إِلَى أَهْلِهِ، وَيَتَزَوَّدُ لِذَلِكَ، ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى خَدِيجَةَ فَيَتَزَوَّدُ لِمِثْلِهَا، حَتَّى جَاءَهُ ٱلْحَقُّ وَهُوَ فِي غَارِ حِرَاءٍ، فَجَاءَهُ ٱلْمَلَكُ فَقَالَ: ٱقْرَأْ، قَالَ: (مَا أَنَا بِقَارِئٍ). قَالَ: (فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي حَتَّى بَلَغَ مِنِّي ٱلْجَهْدَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي) فَقَالَ: ٱقْرَأْ، قُلْتُ: (مَا أَنَا بِقَارِئٍ، فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي ٱلثَّانِيَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي ٱلْجَهْدَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي) فَقَالَ: ٱقْرَأْ، فَقُلْتُ: (مَا أَنَا بِقَارِئٍ، فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي

सामान ले जाते। एक रोज जबकि आप हिरा में थे। इतने में आपके पास हक आ गया और एक फरिश्ते ने आकर आपसे कहा : पढ़ो! आपने फरमाया, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ, इस पर फरिश्ते ने मुझे पकड़कर खूब दबाया, यहां तक कि मेरी ताकते बर्दाश्त जवाब देने लगी, फिर उसने मुझे छोड़ दिया और कहा : पढ़ो! फिर मैंने कहा, मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उसने दोबारा मुझे पकड़कर दबोचा, यहां तक कि मेरी ताकत बर्दाश्त से बाहर हो गयी। फिर छोड़ कर कहा, पढ़ो! मैंने फिर कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ, उसने तीसरी बार मुझे पकड़कर दबाया, फिर छोड़कर कहा, पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया, और तुम्हारा रब तो निहायत करीम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन आयतों को लेकर वापस आये और आप का दिल धड़क रहा था। चूनांचे आप (अपनी बीवी) खदीजा बिन्ते

ٱلثَّالِثَةَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي) فَقَالَ: ﴿ٱقْرَأْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلَّذِي خَلَقَ ○ خَلَقَ ٱلْإِنسَٰنَ مِنْ عَلَقٍ ○ ٱقْرَأْ وَرَبُّكَ ٱلْأَكْرَمُ﴾. فَرَجَعَ بِهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَرْجُفُ فُؤَادُهُ، فَدَخَلَ عَلَى خَدِيجَةَ بِنْتِ خُوَيْلِدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا فَقَالَ: (زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي). فَزَمَّلُوهُ حَتَّى ذَهَبَ عَنْهُ ٱلرَّوْعُ، فَقَالَ لِخَدِيجَةَ وَأَخْبَرَهَا ٱلْخَبَرَ: (لَقَدْ خَشِيتُ عَلَى نَفْسِي). فَقَالَتْ خَدِيجَةُ: كَلَّا وَٱللهِ مَا يُخْزِيكَ ٱللهُ أَبَدًا، إِنَّكَ لَتَصِلُ ٱلرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ ٱلْكَلَّ، وَتَكْسِبُ ٱلْمَعْدُومَ، وَتَقْرِي ٱلضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ ٱلْحَقِّ. فَٱنْطَلَقَتْ بِهِ خَدِيجَةُ حَتَّى أَتَتْ بِهِ وَرَقَةَ بْنَ نَوْفَلِ بْنِ أَسَدِ بْنِ عَبْدِ ٱلْعُزَّى، ٱبْنَ عَمِّ خَدِيجَةَ، وَكَانَ ٱمْرَأً تَنَصَّرَ فِي ٱلْجَاهِلِيَّةِ، وَكَانَ يَكْتُبُ ٱلْكِتَابَ ٱلْعِبْرَانِيَّ، فَيَكْتُبُ مِنَ ٱلْإِنْجِيلِ مَا شَاءَ ٱللهُ أَنْ يَكْتُبَ، وَكَانَ شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ عَمِيَ، فَقَالَتْ خَدِيجَةُ: يَا ٱبْنَ عَمِّ، ٱسْمَعْ مِنِ ٱبْنِ أَخِيكَ. فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ: يَا ٱبْنَ أَخِي مَاذَا تَرَى؟ فَأَخْبَرَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ خَبَرَ مَا رَأَى، فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ: هَٰذَا ٱلنَّامُوسُ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱللهُ عَلَى مُوسَى، يَا لَيْتَنِي فِيهَا جَذَعًا، لَيْتَنِي أَكُونُ حَيًّا إِذْ يُخْرِجُكَ قَوْمُكَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَوَ مُخْرِجِيَّ هُمْ؟). قَالَ: نَعَمْ، لَمْ يَأْتِ رَجُلٌ

खुवैलिद रजि. के पास तशरीफ लाये और फरमाया : ''मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे चादर उढ़ा दो।'' उन्होंने आपको चादर उढ़ा दी, यहां तक कि डर की हालत खत्म हो गयी। फिर आपने खदीजा रजि. को किस्से की खबर देते हुये फरमायाः ''मुझे अपनी जान का डर है।'' खदीजा रजि. ने कहाः बिल्कुल नहीं, अल्लाह की कसम! अल्लाह तआला आपको कभी जलील नहीं करेगा। आप रिश्ते जोड़ते हैं, कमजोरों का बोझ उठाते हैं, फकीरों व मोहताजों को कमाकर देते हैं, मेहमानों की खातिरदारी करते हैं और हक के सिलसिले में पेश आने वाली तकलीफों में मदद करते हैं।

قَطُّ بِمِثْلِ مَا جِئْتَ بِهِ إِلَّا عُودِيَ، وَإِنْ يُدْرِكْنِي يَوْمُكَ أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا. ثُمَّ لَمْ يَنْشَبْ وَرَقَةُ أَنْ تُوُفِّيَ، وَفَتَرَ ٱلْوَحْيُ. [رواه البخاري: ٣]

फिर खदीजा रजि., रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को साथ लेकर अपने चचाज़ाद भाई वरका बिन नौफल बिन असद बिन अब्दुल उज्जा के पास आयीं। वरका जिहालत के जमाने में ईसाइ हो गये थे और इबरानी जुबान भी लिखना जानते थे। चूनांचे इबरानी जुबान में जितना अल्लाह को मन्जूर होता, इंजील लिखते थे। वरका बहुत बूढ़े और अंधे हो चुके थे, उनसे खदीजा रजि. ने कहा, भाई जान! आप अपने भतीजे की बात सुनें। वरका ने पूछाः भतीजे क्या देखते हो? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ देखा था, वह बयान कर दिया। इस पर वरका ने आपसे कहाः यह तो वही नामूस (वह्य लाने वाला फरिश्ता) है, जिसे अल्लाह ने मूसा अलैहि. पर नाजिल फरमाया था, काश मैं आपके नबी होने के जमाने में ताकतवर होता, काश मैं उस वक्त तक जिन्दा रहूं, जब आपकी कौम आपको निकाल देगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अच्छा

तो क्या वह लोग मुझे निकाल देंगे? वरका ने कहा : हां! जब भी कोई आदमी इस तरह का पैगाम लाया, जैसा आप लाये हैं तो उससे जरूर दुश्मनी की गई और अगर मुझे आप का जमाना नसीब हुआ तो मैं तुम्हारी भरपूर मदद करूंगा, उसके बाद वरका जल्दी ही मर गये और वह्य रूक गई।

तो आपने जाना की कैसे गुफा के अंदर मोहम्मद पर कुरान की पहली आयते नाजिल हुई (उतरी)

कुछ लोग जो हिंदुओ को गुफा पुत्र कहकर चिढ़ाते है वे जान ले की उनका स्वयं का मजहब ही गुफा की पैदाइश है असली गुफा पुत्र वे ही है अन्य कोई और नहीं !!

विशेष बात यह है की जब मोहम्मद पर अल्लाह की पहली आयते उतरी तो वह डर गया और अपनी बीवी के पास भागकर गया , अरे भाई यह क्यों ? इंसान जब ईश्वर के पास जाता है या ईश्वरीय बातो का ध्यान करता है तब वह भयमुक्त होता है ना की ऐसे डरता है !! आखिर कुरान सचमुच अल्लाह की ही वाणी है तो उसकी पहली आयत नाजिल होने पर रसूल डर क्यों गया ?

Five Pillars of Islam

इस्लाम जिन 5 खम्बो पर टिका है वो है

1 : कलमा / ईमान :– " ला इलाहा इलाल्लाह मोहमदुर्र रसूलल्लाह " यानी ये स्वीकार करना की अल्लाह के अलावा कोई और पूजने योग्य नहीं है और मोहम्मद अल्लाह का रसूल है

2 : नमाज :– दिन में पांच बार अल्लाह की उपासना

3 : हज :– काबा (सऊदी अरब में स्थित जिसे अल्लाह का घर भी कहा जाता है) पर जाना

4 : रोजे :– रमजान में सूर्यास्त तक उपवास रखना

5 : जकात :– अपनी आमदनी का एक निश्चित हिस्सा इस्लाम के प्रचार प्रसार में देना

Sahih al-Bukhari 8

Narrated Ibn 'Umar:

Allah's Messenger (ﷺ) said: Islam is based on (the following) five (principles):

1. To testify that none has the right to be worshipped but Allah and Muhammad is Allah's Messenger (ﷺ).
2. To offer the (compulsory congregational) prayers dutifully and perfectly.
3. To pay Zakat (i.e. obligatory charity) .
4. To perform Hajj. (i.e. Pilgrimage to Mecca)
5. To observe fast during the month of Ramadan. [2]

बाब 1 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान : ''इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर है।''

١ - باب: قَوْلُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: بُنِيَ الإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ

8 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : ''इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर रखी गई है। गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद हकीकी नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं, नमाज कायम करना, जकात अदा करना, हज्ज करना और रमजानुल मुबारक के रोजे रखना।''

٨ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (بُنِيَ ٱلإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا ٱللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ، وَإِقَامِ ٱلصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ ٱلزَّكَاةِ، وَٱلْحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ). [رواه البخاري: ٨]

[2] **Reference - Sahih Al Bukhari 8**

कलमा :– इस्लाम की बुनियादी चीज है यदि कोई मुस्लिम बनता है तो उसे कलमा पढ़ना पड़ता है , इसमें यह कहा जाता है " अशहादु ला इलाहा इलाल्लाह मोहमदुर्र रसूलल्लाह "

अर्थात :– मैं गवाही देता हु की अल्लाह के अलावा कोई और पूजने योग्य नहीं है और मोहम्मद अल्लाह का रसूल है।

जो लोग धार्मिक स्वतंत्रता के पक्षधर है वे देख ले की कैसे इस्लाम के मानने वाले अपने खुदा अल्लाह के सिवाय किसी और को पूजने के योग्य नहीं मानते , क्या ये अन्य लोगो की धार्मिक भावनाओं का मजाक और उनपर प्रहार नही है?

इस्लाम की नींव ही दूसरों के देवी देवताओं को नकराने व उन्हे अपने अल्लाह से नीचा / छोटा दिखाने पर आधारित है।

मुसलमान कौन है

इस्लाम के मानने वाले लोगो को मुसलमान कहते है ,जो इस्लाम के 5 Pillars को माने वो मुस्लिम है।

मुसलमान वह है जो ईमान लाए

ईमान लाने का मतलब है स्वीकार करने से

मुसलमानो को इस्लामिक किताबों में मोमिन , ईमानवाला , मुस्लिम , Believer कहा जाता है।

आइए कुरान व हदीस से देखते है वे कौनसी चीजे है जिनपर ईमान लाने से एक व्यक्ति मुसलमान होता है

8:2

إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُهُۥ زَادَتْهُمْ إِيمَٰنًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٢﴾

The ˹true˺ believers are only those whose hearts tremble at the remembrance of Allah, whose faith increases when His revelations are recited to them, and who put their trust in their Lord.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

(वास्तव में) ईमान वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए, तो उनके दिल काँप उठते हैं, और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाएँ, तो उनका ईमान बढ़ा देती हैं, और वे अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

4:136

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ ءَامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِى نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ مِن قَبْلُ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٣٦﴾

O believers! Have faith in Allah, His Messenger, the Book He has revealed to His Messenger, and the Scriptures He revealed before. Indeed, whoever denies Allah, His angels, His Books, His messengers, and the Last Day has clearly gone far astray.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

ऐ ईमान वालो! अल्लाह, उसके रसूल और उस पुस्तक पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने अपने रसूल (मुहम्मद) पर उतारी और उस किताब पर भी जो उसने इससे पहले उतारी। और जो व्यक्ति अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी पुस्तकों और अंतिम दिवस (परलोक) का इनकार करे, वह निश्चय बहुत दूर की गुमराही में जा पड़ा।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

8:3

ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣﴾

˹They are˺ those who establish prayer and donate from what We have provided for them.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

वे लोग जो नमाज़ स्थापित करते हैं तथा हमने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उसमें से ख़र्च करते हैं।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

Musnad Ahmad 1112

It was narrated that ‘Ali (رضي الله عنه) said:

The Messenger of Allah (ﷺ) said: “No one truly **believes** until he **believes** in four things: he **believes** in Allah, he **believes** that Allah sent me with the truth, he **believes** in the resurrection after death, and he **believes** in the divine decree, both good and bad.”[3]

[3] **Reference:- Musnad Ahmad Hadith no 1112 , Quran 8: 2 – 3 , 4 : 136**

उपयुक्त आयतों व हदीस से पता चलता है की मुसलमान वह है जो निम्न चीजों पर ईमान (Faith) लाए अथवा स्वीकार करे।

- अल्लाह पर
- अल्लाह के रसूल अथवा पैगंबरों पर
- अल्लाह के फरिश्तों (Angels) पर
- अल्लाह की किताब पर
- कयामत के दिन पर

जो भी इन चीजों में से किसी भी एक चीज पर अविश्वास करे तो वो मुस्लिम नही है। अतः मुस्लिम होने के लिए इन सभी चीजों पर ईमान लाना जरूरी है।

काफिर / मुशरिक कौन ?

इस्लाम मनुष्यो को 2 हिस्सों में बाटता है एक है मोमिन और दूसरा है काफिर

मोमिन अथवा मुस्लिम कौन है ये चर्चा हम ऊपर कर चुके है अब आपको बताते है की काफिर एवं मुशरिक कौन है..

काफिर एक अरबी भाषा का शब्द है जिसका मतलब है जो विश्वास ना करे (Disbeliever)

जो भी व्यक्ति जो उन चीजों को नही मानता जो मुस्लिम मानते है [4] उन्हे इस्लाम में काफिर कहा जाता है।

इसी बात के कुछ प्रमाण इस्लामिक किताबों से लेते है।

[4] इन सभी चीजों की चर्चा हम " मुसलमान कौन है " अध्याय में ऊपर कर चुके है

5:86

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَآ أُو۟لَـٰٓئِكَ أَصْحَـٰبُ ٱلْجَحِيمِ ٨٦

But those who disbelieved and denied Our signs - they are the companions of Hellfire.

— Saheeh International

तथा जो काफ़िर हो गये और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी हैं।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

2:98

مَن كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلَـٰٓئِكَتِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَىٰلَ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَـٰفِرِينَ ٩٨

Whoever is an enemy of Allah, His angels, His messengers, Gabriel, and Michael, then ˹let them know that˺ Allah is certainly the enemy of the disbelievers.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

जो कोई अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिबरील तथा मीकाल का शत्रु हो, तो निःसंदेह अल्लाह सब काफ़िरों का शत्रु है।[1]

— Maulana Azizul Haque al-Umari

कुछ प्रसिद्ध इस्लामिक स्कॉलर्स से भी काफिर की परिभाषा जानते है।

नोट – इन 🔗 लिंक पर क्लिक करके आप वीडियो देख सकते है।

[Famous Islamic Scholar Assim AlHakeem in English]

[Famous Islamic Scholar Mufti Tariq Masood in hindi]

काफिरों की सजा

तो आपने जाना की कैसे सभी Non - Muslims को काफिर कहा जाता है। अब इस्लाम काफिरों के बारे में क्या कहता है वो जानिए।

5

4:56

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم بَدَّلْنَـٰهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا۟ ٱلْعَذَابَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

Indeed, those who disbelieve in Our verses - We will drive them into a fire. Every time their skins are roasted through, We will replace them with other skins so they may taste the punishment. Indeed, Allāh is ever Exalted in Might and Wise.

— Saheeh International

वास्तव में, जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया, हम उन्हें नरक में झोंक देंगे। जब-जब उनकी खालें पकेंगी, हम उनकी खालें बदल देंगे, ताकि वे यातना चखें, निःसंदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

5:86

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَآ أُو۟لَـٰٓئِكَ أَصْحَـٰبُ ٱلْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾

But those who disbelieved and denied Our signs - they are the companions of Hellfire.

— Saheeh International

तथा जो काफ़िर हो गये और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी हैं।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

[5] **Reference:- Quran 4 : 56 , 5 :86**

इस्लाम को ना मानने वाले काफिर जहन्नुम (Hell) में होंगे जहा उनकी खाल को पकाया जाएगा और जब वह पक जाएगी तो दोबारा से नई खाल लगाके यातना दी जाएगी।

वाह क्या दया है अल्लाह की काफिरों के प्रति !!

- अल्लाह का मुसलमानो को आदेश है की काफिरों से युद्ध करो या तो वे मुसलमान बन जाए या उनका कत्ल करो।

9:29

قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَلَا بِٱلْيَوْمِ
ٱلْـَٔاخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَلَا
يَدِينُونَ دِينَ ٱلْحَقِّ مِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟
ٱلْكِتَٰبَ حَتَّىٰ يُعْطُوا۟ ٱلْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ
صَٰغِرُونَ ٢٩

Fight those who do not believe in Allah and the Last Day, nor comply with what Allah and His Messenger have forbidden, nor embrace the religion of truth from among those who were given the Scripture,[1] until they pay the tax,[2] willingly submitting, fully humbled.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

(ऐ ईमान वालो!) उन किताब वालों से युद्ध करो, जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन (क़ियामत) पर, और न उसे हराम समझते हैं, जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम (वर्जित) किया है और न सत्धर्म को अपनाते हैं, यहाँ तक कि वे अपमानित होकर अपने हाथ से जिज़या दें।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

6

[6] **Reference :- Quran 9 : 29**

9:123

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ ٱلْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا۟ فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

O believers! Fight the disbelievers around you and let them find firmness in you. And know that Allah is with those mindful ˹of Him˺.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

ऐ ईमान वलो! काफ़िरों में से जो तुम्हारे क़रीब हैं, उनसे लड़ो [1] और ज़रूरी है कि वे तुममें कुछ सख्ती पाएँ और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

9:5

فَإِذَا ٱنسَلَخَ ٱلْأَشْهُرُ ٱلْحُرُمُ فَٱقْتُلُوا۟ ٱلْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَٱحْصُرُوهُمْ وَٱقْعُدُوا۟ لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِن تَابُوا۟ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ ٱلزَّكَوٰةَ فَخَلُّوا۟ سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

But once the Sacred Months have passed, kill the polytheists ˹who violated their treaties˺ wherever you find them, [1] capture them, besiege them, and lie in wait for them on every way. But if they repent, perform prayers, and pay alms-tax, then set them free. Indeed, Allah is All-Forgiving, Most Merciful.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

7

अतः जब सम्मानित महीने बीत जाएँ, तो बहुदेववादियों (मुश्रिकों) को जहाँ पाओ, क़त्ल करो और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो [1] और उनके लिए हर घात की जगह बैठो। फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें तथा ज़कात दें, तो उनका रास्ता छोड़ दो। निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील, अत्यंत दयावान् है।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

[7] Reference:- **Quran 9 : 123 , 9 : 5**

Sahih al-Bukhari 25

Narrated Ibn 'Umar:

Allah's Messenger (ﷺ) said: "I have been ordered (by Allah) to fight against the people until they testify that none has the right to be worshipped but Allah and that Muhammad is Allah's Messenger (ﷺ), and offer the prayers perfectly and give the obligatory charity, so if they perform that, then they save their lives and property from me except for Islamic laws and then their reckoning (accounts) will be done by Allah." [8]

٢٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ ٱلنَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا أَنْ لاَ إِلَهَ إِلَّا ٱللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رسُولُ ٱللهِ، وَيُقِيمُوا ٱلصَّلاةَ، ويُؤْتُوا ٱلزَّكَاةَ، فَإِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّ ٱلإِسْلاَمِ، وَحِسَابُهُمْ عَلَى ٱللهِ). [رواه البخاري: ٢٥]

24 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मुझे हुक्म मिला है कि मैं लोगों से जंग जारी रखूं, यहां तक कि वह इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई माबूदे हकीकी नहीं और बेशक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल है। पूरे आदाब से नमाज अदा करें और जकात दें, जब वह यह करने लगें तो उन्होंने अपने जान और माल को मुझ से बचा लिया। सिवाये इस्लाम के हक के और उनका हिसाब अल्लाह के हवाले है।"

[8] **Reference:- Sahih Bukhari Hadith No 24 25**

उपयुक्त हदीस में खुद मोहम्मद ने कहा है की मुझे हुकुम मिला है (अल्लाह से) की मैं तब तक लोगो से जंग (War) करू तब तक की वे इस्लाम न स्वीकार करले अगर वे इस्लाम स्वीकार करते है तो उनकी जान और संपति मुझसे सुरक्षित रहेगी।

यानि ये स्पष्ट है की इस्लाम सभी काफिरों (Non Muslims) से तब तक युद्ध करने की कहता है जब तक की वे इस्लाम न स्वीकार करले। क्योंकि ये वचन इनके रसूल के है जो खुद अल्लाह के वचन माने जाते है। ऐसी अनेकों आयते व हदीसे इस्लाम में भरी पड़ी है।

काफिरों के पास सिर्फ 3 ही विकल्प है।

- **इस्लाम स्वीकार करो**
- **जजिया tax दो**
- **मर जाओ**

जन्नत (Paradise)

इस्लामिक मान्यता है की इंसान के मरने के बाद जब वे कब्र में गड़ जाएंगे तो एक दिन आएगा जिसे कयामत कहते है उस दिन सभी मुर्दे कब्रो से उठाए जाएंगे और पुनः जीवित करे जाएंगे तथा उन्हें जन्नत (Paradise) या दोजख (Hell) भेजा जाएगा।

पहले तो आप यह जान ले की जन्नत सिर्फ मुसलमानो के लिए है अन्य किसी भी काफिर के लिए सिर्फ दोजख[9] है।

कुरान व हदीस में अनेक जगह अल्लाह ने इसी जन्नत और उसमे मिलने वाली चीजों का लालच मुसलमानो को दिया है जिसे विस्तार से जानेंगे।

[9] प्रमाण अगले पृष्ठ पर पढ़े।

98:6

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ وَٱلْمُشْرِكِينَ فِى نَارِ جَهَنَّمَ
خَٰلِدِينَ فِيهَآ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ ٱلْبَرِيَّةِ ٦

Indeed, those who disbelieve from the People of the Book and the polytheists will be in the Fire of Hell, to stay there forever. They are the worst of ˹all˺ beings.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

नि:संदेह किताब वालों और मुश्रिकों में से जो लोग काफ़िर हो गए, वे सदा जहन्नम की आग में रहने वाले हैं, वही लोग सबसे बुरे प्राणी हैं।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

नि:संदेह उन लोगों ने कुफ़्र किया, जिन्होंने कहा कि नि:संदेह अल्लाह [1] तो मरयम का बेटा मसीह ही है। जबकि मसीह ने कहा : ऐ बनी इसराईल! अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। नि:संदेह सच्चाई यह है कि जो भी अल्लाह के साथ साझी बनाए, तो निश्चय उसपर अल्लाह ने जन्नत हराम (वर्जित) कर दी और उसका ठिकाना आग (जहन्नम) है। तथा अत्याचारियों के लिए कोई मदद करने वाले नहीं।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

5:72

لَقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ
مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ ٱلْمَسِيحُ يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ رَبِّى
وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ ٱلْجَنَّةَ
وَمَأْوَىٰهُ ٱلنَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ٧٢

Those who say, “Allah is the Messiah, son of Mary,” have certainly fallen into disbelief. The Messiah ˹himself˺ said, “O Children of Israel! Worship Allah—my Lord and your Lord.” Whoever associates others with Allah ˹in worship˺ will surely be forbidden Paradise by Allah. Their home will be the Fire. And the wrongdoers will have no helpers.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

Sahih al-Bukhari 6528

Narrated `Abdullah:

While we were in the company of the Prophet in a tent he said, ''Would it please you to be one fourth of the people of Paradise?" We said, "Yes." He said, "Would It please you to be one-third of the people of Paradise?" We said, "Yes." He said, "Would it please you to be half of the people of Paradise?" We said, "Yes." Thereupon he said, "I hope that you will be one half of the people of Paradise, for **none** will **enter** Paradise but a **Muslim** soul, and you people, in comparison to the people who associate others in worship with Allah, are like a white hair on the skin of a black ox, or a black hair on the skin of a red ox."

उपयुक्त आयते व हदीस पढ़कर जान ले की काफिर व मुशरिको के लिए जन्नत हराम (Forbidden) है उनका ठिकाना सिर्फ जहन्नुम (Hell) है

अब जानते है मुसलमानो को जन्नत में क्या मिलेगा !!

कुरान की सुरा 56 के अनुसार कयामत के बाद सभी मनुष्यों को 3 श्रेणियों (Categories) में बांटा जाएगा।

1. – अल्लाह के सिंहासन के दाई तरफ वाले
(जन्नत में जाने वाले)

2 – बाई तरफ वाले (जहन्नुम में जाने वाले)

3 – सामने वाले (इस्लाम स्वीकार करने वाले
शुरुआती लोग)

दाईं तरफ वाले और सामने वालो को ही जन्नत में प्रेवश मिलेगा इनके लिए अल्लाह

मियां ने विशेष व्यवस्था कर रखी है आइए देखते है..

Quran 56 : 1 When the Inevitable Event takes place,
Translation — Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran
जब घटित होने वाली घटित हो जाएगी।
अनुवादक — Maulana Azizul Haque al-Umari

56:2
then no one can deny it has come.
उसके घटित होने में कोई झूठ नहीं।

56:7
you will ˹all˺ be ˹divided into˺ three groups:
और तुम तीन प्रकार के लोग हो जाओगे।

56:8
the people of the right, how ˹blessed˺ will they be;
तो दाहिने हाथ वाले, क्या ही अच्छे हैं दाहिने हाथ वाले!

56:9
the people of the left, how ˹miserable˺ will they be;
और बाएँ हाथ वाले, क्या बुरे हैं बाएँ हाथ वाले!

56:10 – and the foremost ˹in faith˺ will be the foremost ˹in Paradise˺.

और जो आगे वाले हैं, वही आगे बढ़ने वाले हैं।

56:11

They are the ones nearest ˹to Allah˺,

यही लोग निकट किए हुए हैं।

56:12

فِي جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ ١٢

] in gardens of bliss,

— Maarif-ul-Quran

वे सुखों के स्वर्गों में होंगे।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:13

ثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ ١٣

] many from the earlier generations,

— Maarif-ul-Quran

बहुत-से अगले लोगों में से।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:14

وَقَلِيلٌ مِّنَ ٱلْءَاخِرِينَ ١٤

and of a small number from the later ones.

— Maarif-ul-Quran

तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:15

عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ١٥

(They will be sitting) on thrones woven with gold,

— Maarif-ul-Quran

स्वर्ण से बुने हुए तख़्तों पर।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

अल्लाह का पक्षपात आप देख सकते है पहले तो वो काफिरों को सिर्फ इस्लाम न मानने के कारण जहन्नुम की यातना देता है और मुसलमानो को अपने निकट बताता है। यानि की अल्लाह सिर्फ एक समुदाय का ही खुदा है पूरी मानवता का नही।

56:16

مُّتَّكِـِٔينَ عَلَيْهَا مُتَقَـٰبِلِينَ ١٦

reclining on them, facing each other.

— Maarif-ul-Quran

तकिये लगाये उनपर, एक-दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:17

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَٰنٌ مُّخَلَّدُونَ ١٧

They will be served in rounds by Immortal boys

— Maarif-ul-Quran

फिरते होंगे उनकी सेवा के लिए बालक, जो सदा (बालक) रहेंगे।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:18

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ١٨

with bowls and jugs and a goblet of pure wine,

— Maarif-ul-Quran

प्याले तथा सुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:19

لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ١٩

from which they will neither suffer headache, nor will they be intoxicated,

— Maarif-ul-Quran

न तो सिर चकरायेगा उनसे, न वे निर्बोध होंगे।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

यहां पर जो ये बालक उनकी सेवा में होंगे उन्हे गिलमा कहा जाता है।

जन्नत में उन्हे विशेष तरह की शराब 🥂 मिलेगी जिससे जन्नतियो का सिर नहीं चकाराएगा।
यानि धरती पर शराब हराम और जन्नत में हलाल   माशाअल्लाह

56:20

وَفَٰكِهَةٖ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ٢٠

and with fruits of their choice,
— Maarif-ul-Quran

तथा जो फल वे चाहेंगे।
— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:21

وَلَحۡمِ طَيۡرٖ مِّمَّا يَشۡتَهُونَ ٢١

and the meat of birds that they desire.
— Maarif-ul-Quran

तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।
— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:22

وَحُورٌ عِينٞ ٢٢

And (for them there will be) houris, having lovely big eyes,
— Maarif-ul-Quran

और गोरियाँ बड़े नैनों वाली।
— Maulana Azizul Haque al-Umari

56:23

كَأَمۡثَٰلِ ٱللُّؤۡلُوِٕ ٱلۡمَكۡنُونِ ٢٣

all (neat and clean) like a hidden pearl,
— Maarif-ul-Quran

छुपाकर रखी हुई मोतियों के समान।
— Maulana Azizul Haque al-Umari

१ – जो फल चाहेंगे वो खाने को मिलेगा
२ – जिस पक्षी का मांस चाहेंगे वो मिलेगा

अरे भाई जन्नत में भी धरती के ही फल और पक्षी ही होंगे या अल्लाह कुछ नया बनाएगा और तुम्हे फल ही खाने है तो जाओ बाजार से खरीद कर खाओ उसके लिए कयामत का इंतजार क्यों
करना ?
जन्नत में हूरे भी मिलेंगी जो गोरी और मोतियों जैसी होंगी। विशेषता ये है की वो नित नई बनाई गई है और वे virgin होंगी।

अब जब हूर बना ही ली गई है और उनकी सूचना भी दे दी गई है तो ये बताओ की कयामत तक उनका मन कैसे लगेगा क्योंकि जन्नत में तो कयामत के बाद ही जावेंगे जब तक हूर के दिन कैसे कटेंगे भाई ?

जन्नत में शराब , लड़किया वो भी virgin, लड़के वो भी नाबालिग , पक्षियों का मांस आदि मिलेगा और ये सब अल्लाह का बंदोबस्त है। इन सभी बंदोबस्त को देखकर ये जन्नत कम और कोई बीयर बार (Beer Bar) और अय्याशी का अड्डा जायदा लग रहा है।

जन्नत में 4 चीजों की नदिया

47:15

مَّثَلُ ٱلْجَنَّةِ ٱلَّتِى وُعِدَ ٱلْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَآ أَنْهَٰرٌ مِّن مَّآءٍ غَيْرِ
ءَاسِنٍ وَأَنْهَٰرٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُۥ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ
لَّذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ
ٱلثَّمَرَٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَٰلِدٌ فِى ٱلنَّارِ
وَسُقُوا۟ مَآءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَآءَهُمْ ١٥

(Here is) a description of the Paradise that is promised for the God-fearing! In it there are rivers of water, never spoiling, and rivers of milk the taste of which would not go bad, and rivers of wine, delicious to the drinkers, and rivers of honey, fully purified. And for them there are all sorts of fruits, and forgiveness from their Lord. Are they like those who will live in Fire forever, and will be given boiling water to drink, and it will tear their bowels into pieces.

— Maarif-ul-Quran

उस स्वर्ग की विशेषता, जिसका वचन दिया गया है आज्ञाकारियों को, उसमें नहरें हैं निर्मल जल की तथा नहरें हैं दूध की, नहीं बदलेगा जिसका स्वाद तथा नहरें हैं मदिरा की, पीने वालों के स्वाद के लिए तथा नहरें हैं मधू की स्वच्छ तथा उन्हीं के लिए उनमें प्रत्येक प्रकार के फल हैं तथा उनके पालनहार की ओर से क्षमा। (क्या ये) उसके समान होंगे, जो सदावासी होंगे नरक में तथा पिलाये जायेंग खौलता जल, जो खण्ड-खण्ड कर देगा उनकी आँतों को?

— Maulana Azizul Haque al-Umari

पानी की नदी तक तो ठीक है लेकिन दूध , शहद और शराब की नदिया वाह जी वाह अब ये बताओ वो दूध की नदियों में जो दूध होगा वो गाय भैंस बकरी किस जानवर का होगा और वो काडेगा (निकालेगा) कौन ? देखलो क्या गजब Philosophy है इस्लाम की।

जन्नत में कैसे जाएंगे

जैसा कि हम आपको बता चुके है की केवल मुसलमान ही कयामत के बाद जन्नत में जाएंगे लेकिन उसके लिए उन्हे क्या करना होगा इसे जानते है।

जन्नत में जाने के कई रास्ते है लेकिन आपको पहले जानना पड़ेगा की जन्नत में भी बहुत तरह के लेवल / स्तर (level) है।

Jami` at-Tirmidhi 2531

'Ubadah bin As-Samit narrated that the Messenger of Allah (s.a.w) said:

"In Paradise, there are a hundred levels, what is between every two levels is like what is between the heavens and the earth. Al- **Firdaus** is ts highest level, and from it the four rivers of Paradise are made to flow forth. So when you ask Allah, ask Him for Al- **Firdaus** ." Another chain reports a similar narration.

उपयुक्त हदीस में बताया गया है की जन्नत में 100 Level (स्तर) है और उनमें एक दूसरे की दूरी इतनी है जितनी धरती और आसमान के बीच की है। जिनमे अल फिरदौस सबसे ऊंचा स्तर (level) है।
सामान्य लेवल की जन्नत में तो मुसलमान उन 5 pillars को पूरी तरह मानकर भी जा सकता है लेकिन इस अल फिरदौस में जाने के लिए उसे जिहाद करना पड़ता है

2790. हमसे यह्या बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह़ ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अ़ली ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और नमाज़ क़ायम करे और रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि वो जन्नत में दाख़िल करेगा ख़्वाह अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे या उसी जगह पड़ा रहे जहाँ पैदा हुआ था। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम लोगों को इसकी बशारत न दे दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिये तैयार किये हैं, उनके दो दर्जों में इतना फ़ास़ला है जितना ज़मीन और आसमान में है। इसलिये जब अल्लाह तआ़ला से मांगना हो तो फ़िरदौस मांगो क्योंकि वो जन्नत का सबसे दरम्यानी दर्जा है और जन्नत के सबसे बुलन्द दर्जे पर है; यह्या बिन स़ालेह़ ने कहा कि मैं समझता हूँ यूँ कहा कि, उसके ऊपर परवरदिगार का अ़र्श है और वहीं जन्नत की नहरें निकलती हैं। मुह़म्मद बिन फ़ुलैह़ ने अपने वालिद से व फ़ौक़हू अ़रशुर्रह़मान ही की रिवायत की है। (दीगर मक़ाम : 7423)

٢٧٩٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ آمَنَ بِاللهِ وَبِرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلاَةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، جَاهَدَ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَوْ جَلَسَ فِي أَرْضِهِ الَّتِي وُلِدَ فِيْهَا)). فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، أَفَلاَ نُبَشِّرُ النَّاسَ؟ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَّهَا اللهُ لِلْمُجَاهِدِيْنَ فِي سَبِيْلِ اللهِ مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللهَ فَسَأَلُوهُ الْفِرْدَوسَ فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ - أُرَاهُ: وَفَوقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ - وَمِنْهُ تَفَجَّرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ)). قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ عَنْ أَبِيْهِ: ((وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ)).
[طرفه في: ٧٤٢٣].

Sahih al-Bukhari 2790

Narrated Abu Huraira:

The Prophet said, "Whoever believes in Allah and His Apostle, offer prayer perfectly and fasts the month of Ramadan, will rightfully be granted Paradise by Allah, no matter whether he fights in Allah's Cause or remains in the land where he is born." The people said, "O Allah's Apostle ! Shall we acquaint the people with the is good news?" He said, "Paradise has one-hundred grades which Allah has reserved for the Mujahidin who fight in His Cause, and the distance between each of two grades is like the distance between the Heaven and the Earth. So, when you ask Allah (for something), ask for Al- firdaus which is the best and highest part of Paradise." (i.e. The sub-narrator added, "I think the Prophet also said, 'Above it (i.e. Al- Firdaus) is the Throne of Beneficent (i.e. Allah), and from it originate the rivers of Paradise.")

जिहाद क्या है

अब जानते है की जिहाद क्या है
ये वो इस्लामिक सिद्धांत है जिस कारण आज पूरी दुनिया इस्लामिक आतंकवाद से जूझ रही है।

जिहाद का मतलब है अल्लाह की राह में लड़ना

(To Fight In The Cause Of Allah)

Sahih al-Bukhari 7463

Narrated Abu Huraira:

Allah's Apostle said, "Allah guarantees (the person who carries out Jihad in His Cause and nothing compelled him to go out but Jihad in His Cause and the belief in His Word) that He will either admit him into Paradise (Martyrdom) or return him with reward or booty he has earned to his residence from where he went out."

4763. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और अपने घर से सिर्फ़ इस ग़र्ज़ से निकला कि ख़ालिस़ अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे और उसके कलिमे तौहीद की तस्दीक़ करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी ज़मानत ले लेता है कि उसे जन्नत में दाख़िल करेगा या फिर ष़वाब और ग़नीमत के साथ उसके घर वापस करेगा। (राजेअ़ : 36)

٧٤٦٣- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((تَكَفَّلَ اللهُ لِمَنْ جَاهَدَ فِي سَبِيلِهِ لاَ يُخْرِجُهُ مِنْ بَيْتِهِ، إلاَّ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِهِ وَتَصْدِيقُ كَلِمَتِهِ أنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ أَوْ يَرُدَّهُ إِلَى مَسْكَنِهِ بِمَا نَالَ مِنْ أجْرٍ أَوْ [10]

[10] Reference:- Sahih Al Bukhari 7463

कई लोग इस्लाम को बचाने के लिए जिहाद की जूठी परिभाषा गड़ते है कहते है की जिहाद का मतलब खुद की बुराइयों से युद्ध है।
ऐसे लोगो को जवाब ऊपर की हदीस में दिया गया है जहा अल्लाह लोगो को गारंटी देता है की जिहाद करते समय यदि वह मारा गया तो उसे जन्नत मिलेगी और अगर वह जीवित लौटा तो उसे गनीमत (लूट का सामान) मिलेगा।

अगर खुद की बुराइयों से युद्ध का नाम जिहाद होता तो अल्लाह व उसका रसूल क्यों जिहाद का जिक्र करते समय युद्ध, शहीद , गनीमत आदि की बात करते।

निम्न हदीस में मोहम्मद कहता है की वो आदमी सबसे अच्छा है जो अल्लाह की राह में अपनी जान और धन से जिहाद करे। जान और धन से जिहाद का तात्पर्य युद्ध लड़ने और आर्थिक सहायता से है। ↓↓

Sahih al-Bukhari 2786

Narrated Abu Sa`id Al-Khudri:

Somebody asked, "O Allah's Messenger (ﷺ)! Who is the best among the people?" Allah's Messenger (ﷺ) replied "A believer who strives his utmost in Allah's Cause with his life and property." They asked, "Who is next?" He replied, "A believer who stays in one of the mountain paths worshipping Allah and leaving the people secure from his mischief."

2786. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्होंने कहा कि मुझसे

अता बिन यज़ीद लैषी ने कहा और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह (ﷺ)! कौन शख़्स सबसे अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया वो मोमिन जो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान और माल से जिहाद करे। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा और उसके बाद कौन? फ़र्माया वो मोमिन जो पहाड़ की किसी घाटी में रहना इख़्तियार करे, अल्लाह तआला का डर रखता हो और लोगों को छोड़कर अपनी बुराई से उनको महफ़ूज़ रखे। (दीगर मक़ाम : 6494)

Sahih al-Bukhari 2818

Narrated `Abdullah bin Abi `Aufa:

Allah's Messenger (ﷺ) said, "Know that Paradise is under the shades of swords."

2818. हमसे ज़अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुज़आविया बिन ज़अम्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया मूसा बिन ज़उक़्बा से, उनसे ज़उमर बिन ज़उबैदुल्लाह के मौला सालिम अबुन् नज़्र ने, सालिम ज़उमर बिन ज़उबैदुल्लाह के कातिब भी थे, बयान किया कि ज़अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने उमर बिन ज़उबैदुल्लाह को लिखा था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है यक़ीन जानो जन्नत तलवारों के साये के नीचे है। इस रिवायत की मुताबज़अत उवैसी ने इब्ने अबी ज़िनाद के वास्ते से की और उनसे मूसा बिन ज़उक़्बा ने बयान किया।
(दीगर मक़ाम : 2833, 2966, 3024, 7237)

उपयुक्त हदीस में रसूल ने कहा की जन्नत तलवारों की छाव के नीचे है यानि जन्नत तलवारों से पाई जाती है।

Sunan an-Nasa'i 2624

It was narrated that abu Hurairah said:

"A man asked the Prophet 'O Messenger of **Allah**, which deed is best?' He said: '**Jihad** in the **cause** of **Allah**.' He said: 'Then what?' He said: 'then Hajj Al-Mabrir.'''

मोहम्मद ने कहा की जिहाद सबसे अच्छे / बड़े कर्मो में से है उसके बाद हज है।

9:73

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَـٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَـٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾

O Prophet! Struggle against the disbelievers and the hypocrites, and be firm with them. Hell will be their home. What an evil destination!

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और उनपर सख़्ती करें। और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा लौटकर जाने का स्थान है।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

कुरान स्पष्ट कहती है की काफिरों से जिहाद करो उनपर सख्ती करो उनका ठिकाना जहन्नुम है। अब आप स्वयं भी जान सकते है की अपनी बुराइयों से युद्ध का नाम जिहाद नही है बल्कि काफिरों और मुशरिको से युद्ध और अल्लाह के लिए लड़ने का नाम जिहाद है। यह जिहाद इस्लाम में सबसे शबाब / अच्छा कर्म माना गया है।

हर मुसलमान पर जिहाद करना आदेशित किया गया है

2:216

كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا۟ شَيْـًٔا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰٓ أَن تُحِبُّوا۟ شَيْـًٔا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

Fighting has been made obligatory upon you ˹believers˺, though you dislike it. Perhaps you dislike something which is good for you and like something which is bad for you. Allah knows and you do not know.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

(ऐ ईमान वालो!) तुमपर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, हालाँकि वह तुम्हें बिल्कुल नापसंद है। और हो सकता है कि तुम एक चीज़ को नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो और हो सकता कि तुम एक चीज़ को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। [1]

— Maulana Azizul Haque al-Umari

जिहाद करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है और वह तुमको (तबई तौर पर) गिराँ "यानी भारी और नागवार" (मालूम होता) है, और यह बात मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को गिराँ समझो और वह तुम्हारे हक़ में ख़ैर हो, और यह (भी) मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को अच्छा समझो और वह तुम्हारे हक़ में ख़राबी (का सबब) हो। और अल्लाह तआ़ला जानते हैं और तुम (पूरा-पूरा) नहीं जानते। (216)	كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

[11]

[11] **Reference:-** **Quran 2 : 216 And Tafsir Ibn Kathir**

जो लोग इस्लाम का मतलब Peace समझते है वो उपयुक्त प्रमाणों को पढ़कर जान ले की ये मजहब peace का नही बल्कि Piece का है।

कुरान का अल्लाह और उसका रसूल पहले तो लोगो को 2 हिस्सों में बाटता है फिर काफिरों से जिहाद करने को आम मुसलमानो को आदेशित करता है , जन्नत का लालच देता है

आप जान ले की मजहब के नाम पर दुनिया में दंगा फसाद की जड़ कोई और नहीं बल्कि खुद अल्लाह , उसकी किताब कुरान व उसके रसूल के उपदेश है

मोहम्मद के जीवन की कुछ घटनाएं

अब तक आप जान गए होंगे की मुसलमानो के लिए उनका रसूल मोहम्मद कितना महत्व रखता है, उनके लिए मोहम्मद पर ईमान लाना विश्वास रखना भी जरूरी है तभी वो सच्चे मुसलमान होंगे अन्यथा वे भी काफिर अथवा मुनाफिक(Hypocrite) होंगे।

अब हम अल्लाह के रसूल , मुसलमानो की आन बान शान उनके प्यारे नबी हजरत मोहम्मद सल्लाहौ अलैहि वसल्लम The Perfect Men के जीवन की कुछ घटनाएं या यू कहिए की कारनामे आपके समक्ष पेश करने जा रहे है।

पाठक इन कारनामों को ध्यान से पढ़े और विचार करे की क्या किसी खुदा के भेजे दूत का चरित्र इस प्रकार का हो सकता है जैसा मोहम्मद का था

आयशा से निकाह

मोहम्मद ने अपनी जीवन में 10 से अधिक निकाह किए लेकिन उनमें सबसे ज्यादा रोचक है आयशा के साथ किया निकाह , आइए इसे विस्तार से जानते है।

आयशा अबु बकर की बेटी थी ये अबु बकर मोहम्मद का बचपन का दोस्त था। एक दिन मोहम्मद ने उससे आयशा का हाथ मांगा तब अबु बकर ने क्या कहा वो निम्न हदीस में जानिए

Sahih al-Bukhari 5081

Narrated 'Urwa:

The Prophet (ﷺ) asked Abu Bakr for `Aisha's hand in marriage. Abu Bakr said "But I am your brother." The Prophet (ﷺ) said, "You are my brother in Allah's religion and His Book, but she (Aisha) is lawful for me to marry."

5081. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे यज़ीद बिन ह़बीब ने, उनसे इराक बिन मालिक ने और उनसे उ़र्वा ने कि नबी करीम (ﷺ) ने आ़इशा (रज़ि.) से शादी के लिये अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) से कहा। अबूबक्र (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि मैं आपका भाई हूँ (आप आ़इशा कैसे निकाह़ कैसे करेंगे?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के दीन और उसकी किताब पर ईमान लाने के रिश्ते से तुम मेरे भाई हो और आ़इशा मेरे लिये ह़लाल है।

अबु बकर ने कहा की मैं तुम्हारे भाई जैसा हु लेकिन मोहम्मद ने कहा की तुम मेरे दीनी भाई हो लेकिन आयशा मेरे लिए हलाल है।
अबु बकर को मोहम्मद ने निकाह के लिए राजी कर लिया।

अब देखते है की आयशा की उम्र निकाह के वक्त कितनी थी..

Sahih al-Bukhari 5133

Narrated `Aisha:

that the Prophet (ﷺ) married her when she was six years old and he consummated his marriage when she was nine years old, and then she remained with him for nine years (i.e., till his death).

5133. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ़उययना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ़उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह ज़रत ़आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जब उनसे निकाह किया तो उनकी ़उम्र छः साल थी और जब उनसे सुहबत की तो उस वक़्त उनकी ़उम्र नौ बरस की थी और वो नौ बरस आपके पास रहीं। (राजेअ : 3894)

उपयुक्त हदीस में खुद आयशा बताती है की उसका निकाह 6 साल की उम्र में हुआ और जबवह 9 साल की हुई तब अल्लाह के रसूल ने उससे हम्बिस्तरी (Sex) करा।

अब देखते है की उस समय रसूल की उम्र क्या थी।
उपयुक्त ↑↑ हदीस में कहा है की आयशा रसूल के साथ 9 साल तक यानी मोहम्मद की मौत तक रही।

Sahih al-Bukhari 4466

Narrated `Aisha:

Allah 's Apostle died when he was sixty-three years of age.

मोहम्मद की मौत 63 साल की उम्र में हो गई थी।

अब ऊपर दी गई दोनो हदीसो को मिलाकर पढ़ते है और थोड़ी Calculation करते है।

63 – 9 = 54 (वो समय जब मोहम्मद ने आयशा से sex करा)
54 – 3 = 51 (निकाह के समय की उम्र)

यानि मोहम्मद जब 51 साल का था तब उसने एक 6 साल की बच्ची से निकाह करा और जब वह 9 साल की जो गई तो उसके साथ sex किया।
ऐसी क्या मजबूरी थी रसूल की जो इसने ऐसा करा ये तो सीधा सीधा उसकी ठरक को दर्शाता है।

क्या इस बात को कोई भी सभ्य समाज स्वीकार कर सकता है ? यदि कोई इस बात को स्वीकार करता है और इसमें कुछ भी गलत नही देखता है तो वो आदमी भी एक Pedophile है , उस जैसे व्यक्ति की आज के सभ्य समाज में कोई जगह नही है।

क्या दुनिया का कोई भी मुसलमान अपनी 6 साल की बेटी का निकाह किसी 51 साल के बूढ़े के साथ करेगा क्या ? अगर नही तो क्यों ?

अपने बेटे की पत्नी से निकाह

मोहम्मद ने एक बेटा गोद (Adopt) लिया था जिसका नाम था जैद। लोग उसे जैद बिन मोहम्मद (मोहम्मद का बेटा जैद) के नाम से जानते और पुकारने लगे थे।

उसकी शादी एक जैनब नाम की लड़की से हुई एक दिन जैद कही घर से बाहर गया था तो मोहम्मद उसके घर गया वहा उसने जैनब को बिना कपड़ो के (Naked) देखा, उसे देखकर मोहम्मद का दिल उसपर आ गया लेकिन अगर वह यह बात लोगो को बताता तो लोग उसका मजाक उड़ाते।

Muḥammad's Marriage to Zaynab bt. Jaḥsh

In this year the Messenger of God married Zaynab bt. Jaḥsh.[1]
According to Muḥammad b. 'Umar [al-Wāqidī][2]—'Abdallāh b. 'Āmir al-Aslamī[3]—Muḥammad b. Yaḥyā b. Ḥabbān,[4] who said:

4 The Victory of Islam

According to Yūnus b. 'Abd al-A'lā[11]—Ibn Wahb[12]—Ibn Zayd,[13] who said: The Messenger of God had married Zayd b. Ḥārithah to Zaynab bt. Jaḥsh, his paternal aunt's daughter. One day the Messenger of God went out looking for Zayd. Now there was a covering of haircloth over the doorway, but the wind had lifted the covering so that the doorway was uncovered. Zaynab was in her chamber, undressed, and admiration for her entered the heart of the Prophet. After that happened, she was made unattractive to the other man.[14] So he came and said, "Messenger of God, I want to separate myself from my companion." Muḥammad asked: "What is wrong? Has anything on her part disquieted you?" "No, by God," replied Zayd, "nothing she has done has disquieted me, Messenger of God, nor have I seen anything but good." The Messenger of God said to him, "Keep your wife to yourself, and fear God." That is [the meaning of] the Word of God:[15] "And when you said unto him on whom God has conferred favor and you have conferred favor, 'Keep your wife to yourself, and fear God.' And you did hide in your mind that which God was to bring to light." *You did hide in your mind* [the thought] that "if he separates himself from her, I will marry her."

12

[12] Reference :- History Of Islam By Al Tabri Vol 8 page No 4

यहा स्पष्ट लिखा है की मोहम्मद ने जैनब को नग्न देखा और अल्लाह ने जैनब को जैद की लिए Unattractive (आकर्षण न होना) बना दिया।

वाह मतलब अब अल्लाह को ये ही काम रह गया की वो बेगम और शौहर के रिश्ते खराब करे।

जैद समझ गया था की मोहम्मद का दिल जैनब पर आ गया है तो उसने अपने बाप की इज्जत के लिए उसे तलाक दे दिया
तब अल्लाह ने निम्न आयते मोहम्मद पर उतारी

अल्लाह ने किसी व्यक्ति के लिए उसके सीने में दो दिल नहीं बनाए, और न उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार करते हो, तुम्हारी माएँ बनाया है, और न तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे बेटे बनाया है। यह तो तुम्हारा अपने मुँह से कहना है और अल्लाह सच कहता है तथा वही सीधी राह दिखाता है। [1]

— Maulana Azizul Haque al-Umari

33:4

مَّا جَعَلَ ٱللَّهُ لِرَجُلٍ مِّن قَلْبَيْنِ فِى جَوْفِهِۦ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَٰجَكُمُ ٱلَّٰٓـِٔى تُظَٰهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَآءَكُمْ أَبْنَآءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُم بِأَفْوَٰهِكُمْ ۖ وَٱللَّهُ يَقُولُ ٱلْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى ٱلسَّبِيلَ ٤

Allah does not place two hearts in any person's chest. Nor does He regard your wives as ˹unlawful for you like˺ your real mothers, ˹even˺ if you say they are. [1] Nor does He regard your adopted children as your real children. [2] These are only your baseless assertions. But Allah declares the truth, and He ˹alone˺ guides to the ˹Right˺ Way.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

13

अल्लाह ने बताया की उसने तुम्हारे मुंह बोले बेटो को तुम्हारा असली बेटा नही बनाया है।

[13] **Reference :- Quran 33 : 4**

33:37

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِىٓ أَنْعَمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَٱتَّقِ ٱللَّهَ وَتُخْفِى فِى نَفْسِكَ مَا ٱللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى ٱلنَّاسَ وَٱللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَىٰهُ ۖ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَٰكَهَا لِكَىْ لَا يَكُونَ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِىٓ أَزْوَٰجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا۟ مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ ٱللَّهِ مَفْعُولًا ٣٧

And ˹remember, O Prophet,˺ when you said to the one [1] for whom Allah has done a favour and you ˹too˺ have done a favour, [2] "Keep your wife and fear Allah," while concealing within yourself what Allah was going to reveal. And ˹so˺ you were considering the people, whereas Allah was more worthy of your consideration. So when Zaid totally lost interest in ˹keeping˺ his wife, We gave her to you in marriage, so that there would be no blame on the believers for marrying the ex-wives of their adopted sons after their divorce. And Allah's command is totally binding.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

तथा (ऐ नबी!) आप (वह समय याद करें) जब आप उस व्यक्ति से, जिसपर अल्लाह ने उपकार किया तथा जिसपर आपने (भी) उपकार किया था, कह रहे थे : अपनी पत्नी को अपने पास रोके रखो तथा अल्लाह से डरो। और आप अपने मन में वह बात छिपा रहे थे, जिसे अल्लाह प्रकट करने वाला [1] था। तथा आप लोगों से डर रहे थे, हालाँकि अल्लाह अधिक योग्य है कि आप उससे डरें। फिर जब ज़ैद ने उस (स्त्री) से अपनी आवश्यकता पूरी कर ली, तो हमने आपसे उसका विवाह कर दिया, ताकि ईमान वालों पर अपने मुँह बोले (लेपालक) बेटों की पत्नियों के विषय [2] में कोई तंगी न रहे, जब वे उनसे अपनी आवश्यकता पूरी कर लें। तथा अल्लाह का आदेश तो पूरा होकर ही रहता है।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

14

अल्लाह ने आयते उतारी और कहा की जब जैद ने जैनब को तलाक दे दिया तो ऐ मोहम्मद हमने उससे तुम्हारा निकाह कर दिया।

[14] **Reference :- Quran 33 : 37**

यानि पहले तो अल्लाह जैनब को जैद के लिए Unattractive बनाता है फिर तलाक करवाता है और फिर मोहम्मद से निकाह करवाता है। उपयुक्त आयतों को पढ़कर तो ये लगता है की अल्लाह केवल मोहम्मद के अपने personal कामों के लिए था।

अल्लाह ने अपने ही बंदे जैद का तलाक करवाया और फिर उसकी बीवी का निकाह मोहम्मद से करवा दिया। यानि अल्लाह अपने बंदों में पक्षपात करता है।

ये अल्लाह खुदा नही लग रहा बल्कि किसी का परिवार उजाड़ कर अपने खास लोगो का परिवार बसाने वाला ज्यादा लग रहा है।

मूर्तियों से नफरत / Hate For Idols

इस्लाम में शिर्क को सबसे बड़ा गुनाह माना गया है।
शिर्क का मतलब है अल्लाह के साथ किसी और को शरीक करना अथवा जोड़ना।

अल्लाह चाहे तो लूट हत्या बलात्कार सभी को माफ कर सकता है लेकिन शिर्क को कभी माफ नहीं करता।

4:48

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱفْتَرَىٰٓ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾

Indeed, Allah does not forgive associating others with Him ˹in worship˺, [1] but forgives anything else of whoever He wills. And whoever associates others with Allah has indeed committed a grave sin.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

निःसंदेह, अल्लाह यह क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाए [1] और इसके सिवा जिसे चाहेगा, क्षमा कर देगा। और जिसने अल्लाह का साझी बनाया, उसने बहुत बड़ा पाप गढ़ लिया।

[15] — Maulana Azizul Haque al-Umari

---

[15] Reference :- Quran 4 : 48

इसी शिर्क करने वाले इंसान को मुशरिक [16] कहते है।

शिर्क में सबसे बड़ा हाथ मूर्ति पूजा आदि का माना जाता है।

अब इस्लाम की मूर्तियों से नफरत आपको दिखलाते है..

Sahih al-Bukhari 2478

Narrated `Abdullah bin Mas`ud:

The Prophet entered Mecca and (at that time) there were three hundred-and-sixty idols around the Ka`ba. He started stabbing the idols with a stick he had in his hand and reciting: "Truth (Islam) has come and Falsehood (disbelief) has vanished."

2478. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी नुजैह ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, उनसे अबू मअ़मर ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (फ़तह मक्का के दिन जब) मक्का में दाख़िल हुए तो ख़ान-ए-का'बा के चारों तरफ़ तीन सौ साठ बुत थे। आप (ﷺ) के हाथ में एक छड़ी थी जिससे आप उन बुतों पर मारने लगे और फ़र्माने लगे कि हक़ आ गया और बातिल मिट गया। (दीगर मक़ाम : 4287, 4720)

मोहम्मद ने जब मक्का को जीता तो काबा के आस पास 360 मूर्तियां थी जिन्हे मोहम्मद ने तोड़ा।

[16] जैसा की हम आपको पहले ही प्रमाण दे चुके है की काफिर मुशरिक सभी जहन्नुम में जाएंगे।

Musnad Ahmad 1239

It was narrated from Hanash Abul-Mu`tamir that 'Ali (رضي الله عنه) sent his chief of police on a mission and said:

I am sending you on a mission as the Messenger of Allah (ﷺ) sent me: Do not leave any **grave** without **levelling** it or any statue without knocking it down.

अली[17] ने कहा की मुझे मोहम्मद ने कब्रो को समतल करने और मूर्तियों को तोड़ने के मिशन पर भेजा है।

Sahih Muslim 832

'Amr b. 'Abasa Sulami reported:

that) I have been sent by Allah. I said: What is that which you have been sent with? He said: I have been sent to join ties of relationship (with kindness and affection), to break the Idols, and to proclaim the oneness of Allah (in a manner that) nothing is to be associated with Him. I

[17] इस्लाम का 4th खलीफा (मोहम्मद का चचेरा भाई)

उपयुक्त ↑↑ हदीस में जब मोहम्मद से पूछा गया की तुम्हे क्या उपदेश के साथ अल्लाह ने भेजा है तो उसने कहा की मुझे मूर्तियों को तोड़ने और अल्लाह के साथ किसी को भी शरीक न करने का उपदेश देने के लिए भेजा है।
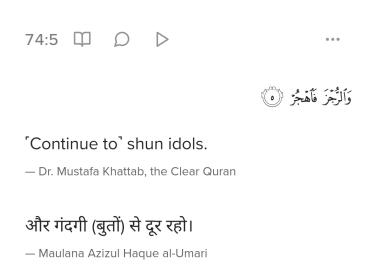
कुरान में मूर्तियों को गंदगी बताया है और उन्हें तोड़ने का उपदेश भी दिया है।

इन्ही सब उपदेशों के चलते मुसलमान मूर्ति तोड़ते है। आप यदि किसी म्यूजियम आदि में हमारी पुरानी मूर्तियों को देखेंगे तो वो इस्लामी आक्रमण के दौरान टूटी हुई मिलेगी।
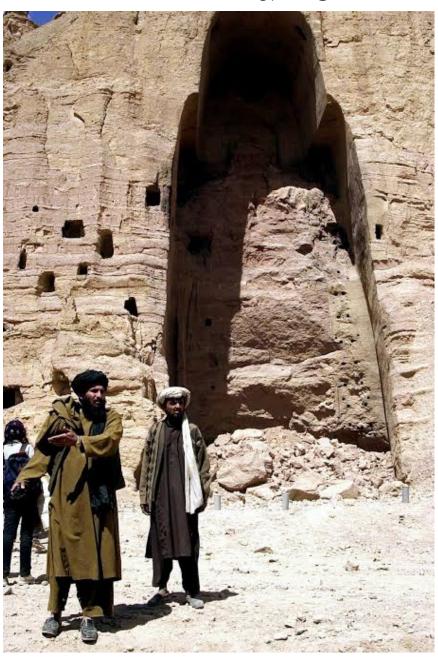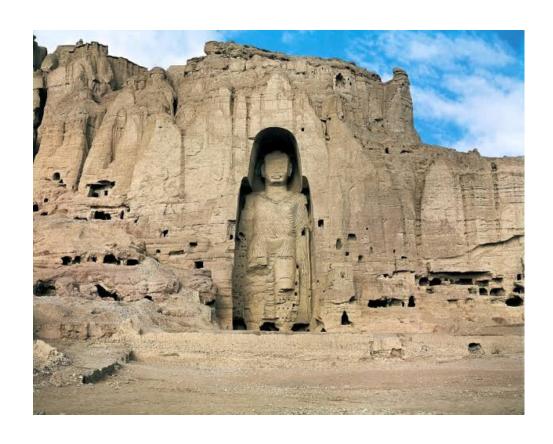
विश्व प्रसिद्ध बामियान बुद्ध की मूर्ति को सन 2001 में अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा तोड़ा गया था।

भीम मीम मुस्लिम दलित एकता वाले जरा इसपर भी कुछ बोल कर तो दिखाओ।

ये ही असली मुस्लिम दलित भाईचारा है।

इस्लाम में नारी की दुर्दशा

आज समाज में Women Rights की चर्चा होती रहती है और संविधान पुरुष और महिलाओं को समानता के अधिकार देता है , लेकिन इस्लाम में नारी के विषय में क्या कहा गया है चलिए जानते है

रसूल ने फरमाया अगर नमाज अदा करते आदमी के आगे से कुत्ता गधा व औरत निकल जाए तो नमाज टूट जाती है।

Sahih Muslim 511

Abu Huraira reported:

The Messenger of Allah (ﷺ) said: A woman, an ass and a dog disrupt the prayer, but something like the back of a saddle guards against that.

इस्लाम के अनुसार एक महिला की गवाही एक पुरूष की तुलना में आधी है यानी

2 महिलाओं की गवाही = 1 पुरूष की गवाही

रसूल के अनुसार यह महिलाओं के दिमाग की कमी के कारण है

Sahih al-Bukhari 2658

Narrated Abu Sa`id Al-Khudri:

The Prophet (ﷺ) said, "Isn't the witness of a woman equal to half of that of a man?" The women said, "Yes." He said, "This is because of the deficiency of a woman's mind."

2658. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें अयाज़ बिन अब्दुल्लाह ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या औरत की गवाही मर्द की गवाही के आधे के बराबर नहीं है? हमने अर्ज़ किया क्यूँ नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि यही तो उनकी अक़्ल का नुक़्सान है।

इसी बात पर एक कुरान की आयत भी देख लेते है

dictate in justice. And bring to witness two witnesses from among your men. And if there are not two men [available], then a man and two women from those whom you accept as witnesses - so that if one of them [i.e., the women] errs, then the other can remind her. And let not the witnesses

उसका वली (अभिभावक) न्याय के साथ लिखवा दे। तथा अपने पुरुषों में से दो गवाहों को गवाह बना लो। फिर यदि दो पुरुष न हों, तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियाँ उन लोगों में से जिन्हें तुम गवाहों में से पसंद करते हो। (इसलिए) कि दोनों में से एक भूल जाए, तो उनमें से एक दूसरी को याद दिला दे। तथा गवाह जब भी बुलाए [18]

अल्लाह स्वयं भी फरमाता है की गवाही के लिए 2 पुरुष को गवाह बना लो यदि दो पुरुष उपलब्ध न हो तो 1 पुरुष और 2 महिलाओ को गवाह बना लो

यानि 1 पुरुष की गवाही दो महिलाओ की गवाई के बराबर है।

वाह क्या Equality है अल्लाह की।

[18] Reference :- Quran 2 : 282

हलाला : महिलाओ के लिए अभिशाप

क्या आपने कभी हलाल शब्द सुना है ? और यदि हाँ तो क्या आप इसका मतलब जानते है ? दरअसल इस अरबी शब्द हलाल का मतलब होता है स्वीकार्य [permissible]
जो चीजे इस्लाम के अनुसार स्वीकार्य [Permissible] है उन्हें हलाल कहते है।

इस्लाम के अनुसार जब किसी महिला का शौहर उसे तीसरी बार तलाक़ देदे तो वह उस महिला से तब तक दोबारा निकाह नही कर सकता जब तक कि वह महिला किसी अन्य पुरुष के साथ निकाह करके शारीरिक संबंध [Sexual Relations] ना बना ले और उसका वो नया
शौहर उसे तलाक़ न देदे। इसे ही इस्लाम में हलाला कहते है।
इसी बात का प्रमाण कुरान से भी देख लेते है..

2:230

فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُۥ مِنۢ بَعۡدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ زَوۡجًا غَيۡرَهُۥۗ فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَآ أَن يَتَرَاجَعَآ إِن ظَنَّآ أَن يُقِيمَا حُدُودَ ٱللَّهِۗ وَتِلۡكَ حُدُودُ ٱللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوۡمٖ يَعۡلَمُونَ ٢٣٠

So if a husband divorces his wife ˹three times˺, then it is not lawful for him to remarry her until after she has married another man and then is divorced. Then it is permissible for them to reunite, as long as they feel they are able to maintain the limits of Allah. These are the limits set by Allah, which He makes clear for people of knowledge.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

[19]

फिर यदि वह उसे (तीसरी) तलाक़ दे दे, तो उसके बाद वह उसके लिए ह़लाल (वैध) नहीं होगी, यहाँ तक कि उसके अलावा किसी अन्य पति से विवाह करे। फिर यदि वह उसे तलाक़ दे दे, तो (पहले) दोनों पर कोई पाप नहीं कि दोनों आपस में रुजू' (दोबारा मिलाप) कर लें, यदि वे दोनों समझें कि अल्लाह की सीमाओं को क़ायम रखेंगे।[1] और ये अल्लाह की सीमाएँ हैं, वह उन्हें उन लोगों के लिए खोलकर बयान करता है, जो ज्ञान रखते हैं।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

[19] **Reference :- Quran 2 : 230**

इस हलाला ने मुस्लिम महिलाओं का जीवन जहन्नुम बना दिया है , शौहर उन्हे जब मर्जी तलाक दे देता है और फिर दोबारा जब उसका मन होता है तब उस बेगम का निकाह अपने किसी खास रिश्तेदार आदि से इस शर्त पर कर देता है की इसके साथ हम्बिस्तरी (Sex) करके हलाला की रश्म पूरी करो और तलाक दे दो जिससे यह दोबारा मेरे निकाह के लिए हलाल हो जाए।

महिलाओ को इन्होंने सिर्फ एक (Sex Toy) बच्चा पैदा करने की मशीन बनाकर रख दिया है।

इस्लाम में अवैज्ञानिक बाते
(Unscientific Things In Islam)

आज का समय मॉडर्न तकनीक व विज्ञान का है आधुनिक शिक्षा व विज्ञान के आधार पर अब पाखंड और अवैज्ञानिक बातो को पकड़ना व खंडन करना बेहद आसान है।

इस्लाम के अनुसार कुरान अल्लाह की दी किताब है और अल्लाह ने ही इस दुनिया में सबकुछ बनाया है , लेकिन कुरान और हदीसो में तो बहुत कुछ विज्ञान के विपरीत है आइए कुछ प्रमाण देखते है।

बात है मदीना में हिजरत के समय की जब कुछ लोगो को मदीना का मौसम रास न आया और वे बीमार हो गए तब रसूल ने उन्हें ऊंट का मूत पीने की सलाह दी थी जिससे वे ठीक हो जाए।

अब आप जब कभी किसी मोमिन को हिंदुओ का गौमूत्र को लेकर मजाक उड़ाते देखे तब आप उन्हे रसूल के इस नुस्खे से भी वाकिफ करवाए।

Sahih al-Bukhari 5686

Narrated Anas:

The climate of Medina did not suit some people, so the Prophet (ﷺ) ordered them to follow his shepherd, i.e. his camels, and drink their milk and urine (as a medicine). So they followed the shepherd that is the camels and drank their milk and urine till their bodies became healthy. Then they killed the shepherd and drove away the camels. When the news reached the Prophet (ﷺ) he sent some people in their pursuit. When they were brought, he cut their hands and feet and their eyes were branded with heated pieces of iron.

रसूल ने अपनी उम्मत (Community) को सलाह दी की जब उनकी किसी चीज में मक्खी गिर जाए तो उसे सीधा ना निकाले परंतु उसे डूबा दे और फिर निकाले क्योंकि उसके एक पंख में बीमारी तो दूसरे में दवाई है।
वाह क्या साइंस है माशाअल्लाह

Sahih al-Bukhari 3320

Narrated Abu Huraira:

The Prophet (ﷺ) said "If a house fly falls in the drink of anyone of you, he should dip it (in the drink) and take it out, for one of its wings has a disease and the other has the cure for the disease."

ऐसी सैकड़ों बाते हदीसो में भरी पड़ी है यदि सिर्फ उन्हे ही लिखने बैठू तो किताब और कई पन्नो की हो जाएगी जो अन्वाश्यक होगा। आप स्वयं भी sunnah.com इस वेबसाइट पर जाकर हदीस पढ़ सकते है।

कुरान के अनुसार ईसा का जन्म
Birth of Jesus as per Quran

मुस्लिमो के अनुसार उनके 1,24000 पैगंबर हुए है जिनमे मोहम्मद आखिरी था। मुसलमान ईसा, मूसा आदि को भी अपना पैगंबर मानते है और इनके बारे में कुरान आदि में भी वर्णन है। ईसा के जन्म के बारे में कुरान में जो लिखा है आइए उसे पढ़ते है

3:45

إِذْ قَالَتِ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ يَـٰمَرْيَمُ إِنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكِ
بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ٱسْمُهُ ٱلْمَسِيحُ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ
وَجِيهًا فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْـَٔاخِرَةِ وَمِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾

˹Remember˺ when the angels proclaimed, “O Mary! Allah gives you good news of a Word [1] from Him, his name will be the Messiah, [2] Jesus, son of Mary; honoured in this world and the Hereafter, and he will be one of those nearest ˹to Allah˺.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

जब फ़रिश्तों ने कहाः हे मर्यम! अल्लाह तुझे अपने एक शब्द[की शुभ सूचना दे रहा है, जिसका नाम मसीह़ ईसा पुत्र मर्यम होगा। वह लोक-प्रलोक में प्रमुख तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा। [1]

— Maulana Azizul Haque al-Umari

3:47

قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِى وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِى بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكِ ٱللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ إِذَا قَضَىٰٓ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

Mary wondered, "My Lord! How can I have a child when no man has ever touched me?" An angel replied, "So will it be. Allah creates what He wills. When He decrees a matter, He simply tells it, 'Be!' And it is!

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

मर्यम ने (आश्चर्य से) कहाः मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उसने[कहाः इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है, उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है, तो उसके लिए कहता है किः "हो जा", तो वह हो जाता है। [1]

— Maulana Azizul Haque al-Umari

3:42

وَإِذْ قَالَتِ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ يَٰمَرْيَمُ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰكِ وَطَهَّرَكِ وَٱصْطَفَىٰكِ عَلَىٰ نِسَآءِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٤٢﴾

And ˹remember˺ when the angels said, "O Mary! Surely Allah has selected you, purified you, and chosen you over all women of the world.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

और (याद करो) जब फरिश्तों ने मर्यम से कहाः हे मर्यम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया तथा पवित्रता प्रदान की और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

66:12

وَمَرۡيَمَ ٱبۡنَتَ عِمۡرَٰنَ ٱلَّتِيٓ أَحۡصَنَتۡ فَرۡجَهَا فَنَفَخۡنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتۡ بِكَلِمَٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِۦ وَكَانَتۡ مِنَ ٱلۡقَٰنِتِينَ ١٢

˹There is˺ also ˹the example of˺ Mary, the daughter of 'Imrân, who guarded her chastity, so We breathed into her ˹womb˺ through Our angel ˹Gabriel˺.[1] She testified to the words of her Lord and His Scriptures, and was one of the ˹sincerely˺ devout.

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

तथा मर्यम, इमरान की पुत्री का, जिसने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हमने उसमें अपनी ओर से रूह (आत्मा) तथा उस (मर्यम) ने सच माना अपने पालनहार की बातों और उसकी पुस्तकों को और वह इबादत करने वालों में से थी।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

तो देखा कैसे अल्लाह ने बिना कैसे किसी आदमी के सिर्फ फूंक देकर मरियम (Mary) से ईसा को पैदा किया।

तो अब किसी मोमिन के घर की महिला इसी तरह बच्चे को जन्म दे तो ये मत सोचना की वो किसी और के साथ हमबिस्तर होके आई है परंतु उसके भी इसी तरह अल्लाह ने फूंक मारी होगी...

गुस्ताख ए नबी की एक सजा ..

जब भी कोई काफिर रसूल के खिलाफ कुछ भी बोलता है चाहे वो सच ही क्यों न हो मुसलमान अक्सर उसे गुस्ताखी कहते है और नारा लगाते है गुस्ताख ए नबी की एक सजा .... आखिर वो सजा क्या है और उसकी शुरुआत के पीछे की कहानी क्या है चलो देखते है। मोहम्मद के समय में एक महिला थी जो मोहम्मद की आलोचना करती व उसे गाली देती थी उसी की कहानी निम्न हदीस में है

Sunan Abi Dawud 4361

Narrated Abdullah Ibn Abbas:

A blind man had a slave-mother who used to abuse the Prophet (ﷺ) and disparage him. He forbade her but she did not stop. He rebuked her but she did not give up her habit. One night she began to slander the Prophet (ﷺ) and abuse him. So he took a dagger, placed it on her belly, pressed it, and killed her. A child who came between her legs was smeared with the blood that was there. When the morning came, the Prophet (ﷺ) was informed about it.

He assembled the people and said: I adjure by Allah the man who has done this action and I adjure him by my right to him that he should stand up. Jumping over the necks of the people and trembling the man stood up.

He sat before the Prophet (ﷺ) and said: Messenger of Allah! I am her master; she used to abuse you and disparage you. I forbade her, but she did not stop, and I rebuked her, but she did not abandon her habit. I have two sons like pearls from her, and she was my companion. Last night she began to abuse and disparage you. So I took a dagger, put it on her belly and pressed it till I killed her.

Thereupon the Prophet (ﷺ) said: Oh be witness, no retaliation is payable for her blood.

4361:— इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है कि एक अन्धा था उस की एक उम्मे वलद थी जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियाँ बकती और बुरा-भला कहती थी। वह उसे मना करता मगर न मानती, वह उसे डाँटता मगर कुछ पर्वा न करती। एक रात वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुरा भला कहने और गालियाँ देने लगी तो उस अन्धे ने एक बर्छा लिया और उस को लौंडी के पेट के ऊपर रख कर उस पर चढ़ गया और इस प्रकार उसे मार डाला। जब सुब्ह हुयी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस के क़त्ल के बारे में बताया गया तो आप ने फ़रमायाः मैं उस आदमी को अल्लाह की क़सम देता हूँ जिस ने यह काम किया है और मेरा उस पर हक़ है कि वह खड़ा हो जाये। यह सुन कर वह अन्धा खड़ा हो गया और लोगों की गर्दने फाँदता हुआ आया, उस के पैर काँप रहे थे, वह आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठ गया और बोलाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने इसे क़त्ल किया है, यह

हद व सज़ाओं का बयान 404 सुनन् अबू दावूद

आप को गालियाँ बकती थी और बुरा-भला कहती थी। मैं इस को मना करता था मगर न मानती थी, मैं इसे डाँटता मगर कुछ न समझती थी। मेरे इस से दो बच्चे भी हैं जैसे कि मोती हों, और वह मेरा बड़ा अच्छा साथ देने वाली थी। बीती रात जब वह आप को गालियाँ देने और बुरा भला कहने लगी तो मैंने बर्छा लिया, उस के पेट पर रख कर दबा दिया और उस की हत्या कर दी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ख़बरदार! गवाह हो जाओ, इस लौंडी का खून बर्बाद है।

यानि उस अंधे आदमी ने अपनी उस लौंडी (Concubine) जो उसके बच्चो की भी मां थी और गर्भवती भी थी को केवल रसूल के गाली देने के चक्कर में मार दिया और रसूल ने उस आदमी को सजा देने के बजाय उसके कत्ल को जायज ठहरा दिया। यही से वो गुस्ताख की सजा निकल कर आई है।

Adultery (व्यभिचार) की सजा औरत को

यदि कोई मुस्लिम पुरुष और स्त्री शादी शुदा होते हुए भी किसी अन्य के साथ Sexual Relations बनाते है तो इस्लाम के अनुसार इसकी सजा ए मौत सिर्फ औरत को मिलती है। खुद रसूल द्वारा किए गए इस फैसले को पढ़िए..

Sahih al-Bukhari 6633, 6634

Narrated Abu Huraira and Zaid bin Khalid:

Two men had a dispute in the presence of Allah's Messenger (ﷺ). One of them said, "O Allah's Messenger (ﷺ)! Judge between us according to Allah's Laws." The other who was wiser, said, "Yes, O Allah's Apostle! Judge between us according to Allah's Laws and allow me to speak. The Prophet (ﷺ) said, "Speak."

He said, "My son was a laborer serving this (person) and he committed illegal sexual intercourse with his wife, The people said that my son is to be stoned to death, but I ransomed him with one-hundred sheep and a slave girl. Then I asked the learned people, who informed me that my son should receive one hundred lashes and will be exiled for one year, and stoning will be the lot for the man's wife." Allah's

stoning will be the lot for the man's wife." Allah's Messenger (ﷺ) said, "Indeed, by Him in Whose Hand my soul is, I will judge between you according to Allah's Laws: As for your sheep and slave girl, they are to be returned to you." Then he scourged his son one hundred lashes and exiled him for one year. Then Unais Al- Aslami was ordered to go to the wife of the second man, and if she confessed (the crime), then stone her to death. She did confess, so he stoned her to death.

उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि दो आदमियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की मज्लिस में अपना झगड़ा पेश किया। उनमें से एक ने कहा कि हमारे दरम्यान आप किताबुल्लाह के मुताबिक़ फ़ैसला कर दें। दूसरे ने, जो ज़्यादा समझदार था कहा कि ठीक है, या रसूलल्लाह! हमारे बीच किताबुल्लाह के मुताबिक़ फ़ैसला कर दीजिए और मुझे इजाज़त दीजिए कि इस मामले में कुछ अर्ज़ करूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कहो। उन साहब ने कहा कि मेरा लड़का इस शख़्स के यहाँ असीफ़ था। असीफ़, अजीर को कहते हैं। (अजीर के मा'नी मज़दूर के हैं) और उसने उसकी बीवी से ज़िना कर लिया। इन्होंने मुझसे कहा कि अब मेरे लड़के को संगसार किया जाएगा। इसलिये (इससे नजात दिलाने के लिये) मैंने सौ बकरियों और एक लौण्डी का इन्हें फ़िदया दे दिया फिर मैंने दूसरे इल्मवालों से इस मसले को पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरे लड़के की सज़ा ये है कि उसे सौ कोड़े लगाए जाएँ और एक साल के लिये शहर बदर कर दिया जाए, संगसार की सज़ा सिर्फ़ उस औरत को होगी। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं तुम्हारे फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ करूँगा। तुम्हारी बकरियाँ और तुम्हारी लौण्डी तुम्हें वापस होगी और फिर आपने उस लड़के को सौ कोड़े लगवाए और एक साल के लिये जलावतन कर दिया। फिर आपने उनैस असलमी से फ़र्माया कि मुद्दई की बीवी को लाएऔर अगर वो ज़िना का इक़रार करे तो उसे संगसार कर दे उस औरत ने ज़िना का इक़रार कर लिया और संगसार कर दी गई। (राजेअ :

यानि रसूल ने लड़के को तो सौ कोड़े और एक साल के लिए देश निकाला देकर छोड़ दिया जबकि उस लड़की को Stone To Death यानि कमर तक जमीन में गाड़कर और तब तक पत्थर मारना जब तक वह मर न जाए की सजा दी

कुछ फेमिनिस्ट जो इस्लाम को Religion of peace and equality बताती है वे पढ़ ले।

ईद : Festival Of Blood

मुसलमानों में दो ईद मनाई जाती है
1 – ईद उल फितर
2 – ईद उल अदा [बकरीद]
अब हम इसी बकरीद की कहानी कुरान से जानेंगे तथा मुसलमानों से कुछ प्रश्न करेंगे

बकरीद पर हर साल करोड़ो जानवरो को मारा जाता है लेकिन इसकी शुरुआत कैसे हुई – अल्लाह के अनेक पैगंबर थे उन्हीं में से एक प्रमुख पैगम्बर था अब्राहम / इब्राहिम , जिसने अल्लाह से एक बेटा मांगा और अल्लाह ने उसे बेटा दे दिया।
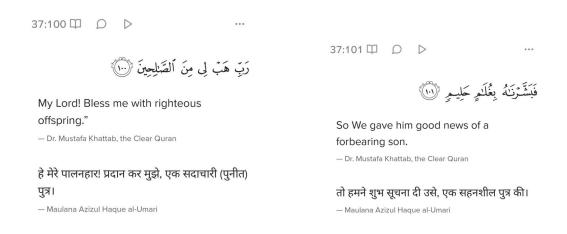
जब वह लड़का बड़ा हुआ तो अब्राहम ने उससे कहा की “ बेटे मैने सपने में देखा है की मुझे तुझे जरूर कुर्बान करना पड़ेगा यानि तुझे मारना पड़ेगा तब लडके ने कहा की “ अल्लाह ने जैसा आदेश दिया है वैसा करो ”

37:102

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ ٱلسَّعْىَ قَالَ يَٰبُنَىَّ إِنِّىٓ أَرَىٰ فِى
ٱلْمَنَامِ أَنِّىٓ أَذْبَحُكَ فَٱنظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَٰٓأَبَتِ
ٱفْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِىٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلصَّٰبِرِينَ

Then when the boy reached the age to work with him, Abraham said, “O my dear son! I have seen in a dream that I ˹must˺ sacrifice you. So tell me what you think.” He replied, “O my dear father! Do as you are commanded. Allah willing, you will find me steadfast.”

— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

फिर जब वह पहुँचा उसके साथ चलने-फिरने की आयु को, तो इब्राहीम ने कहाः हे मेरे प्रिय पुत्र! मैं देख रहा हूँ स्वप्न में कि मैं तुझे वध कर रहा हूँ। अब, तू बता कि तेरा क्या विचार है? उसने कहाः हे पिता! पालन करें, जिसका आदेश आपको दिया जा रहा है। आप पायेंगे मुझे सहनशीलों में से, यदि अल्लाह की इच्छा हुई।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

इब्राहिम अपने बेटे को मारने के लिए तैयार हो गया और कुर्बानी के लिए उसे लेटा दिया तभी अल्लाह की ओर से उसके फरिश्तों ने आवाज दी " ओ इब्राहिम अल्लाह की ओर से फरिश्तों ने कहा –
“ ये अल्लाह की ओर से तेरी परीक्षा थी जिसमे तू सफल हुआ तूने अपना सपना सच कर दिया तू अल्लाह के लिए अपने बेटे को मारने के लिए तैयार हो गया ”

37:103

فَلَمَّآ أَسْلَمَا وَتَلَّهُۥ لِلْجَبِينِ ١٠٣

Then when they submitted ˹to Allah's Will˺, and Abraham laid him on the side of his forehead ˹for sacrifice˺,
— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

अन्ततः, जब दोनों ने स्वयं को अर्पित कर दिया और उस (पिता) ने उसे गिरा दिया माथे के बल।
— Maulana Azizul Haque al-Umari

37:104

وَنَـٰدَيْنَـٰهُ أَن يَـٰٓإِبْرَٰهِيمُ ١٠٤

We called out to him, "O Abraham!
— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

तब हमने उसे आवाज़ दी कि हे इब्राहीम!
— Maulana Azizul Haque al-Umari

37:105

قَدْ صَدَّقْتَ ٱلرُّءْيَآ ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ١٠٥

You have already fulfilled the vision." Indeed, this is how We reward the good-doers.
— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

तूने सच कर दिया अपना स्वप्न। इसी प्रकार, हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
— Maulana Azizul Haque al-Umari

37:106

إِنَّ هَـٰذَا لَهُوَ ٱلْبَلَـٰٓؤُا۟ ٱلْمُبِينُ ١٠٦

That was truly a revealing test.
— Dr. Mustafa Khattab, the Clear Quran

वास्तव में, ये खुली परीक्षा थी।
— Maulana Azizul Haque al-Umari

तब अल्लाह ने उसके बेटे की जगह एक मैंडा कुर्बानी के लिए भेज दिया जिसे इब्राहिम ने मारकर कुर्बानी दी।
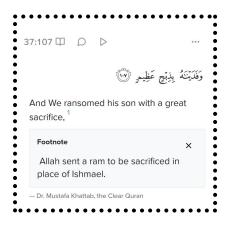
तो अब मुसलमानों से प्रश्न है की –
क्या तुम अपने प्यारे बेटे की कुर्बानी देने को तैयार हो ?
अगर तुम तैयार हो तो अपने बेटे को कुर्बानी के लिए तैयार करो
अगर तुम्हारा ईमान सच्चा है तो अल्लाह ऐन मौके पर तुम्हारे लिए भी एक मैंडा भेज देगा जिससे तुम्हारा बेटा बच जाएगा।

अगर अल्लाह ने आसमान से फरिश्तों के साथ तुम्हारे लिए मेंडा ना भेजा तो समझ लेना की या तो तुम्हारे ईमान में कमी है या सातवे आसमान तक सिग्नल नहीं पहुंच रहे है।

Better Luck Next Time

काफिरों से दोस्ती / Friendship With Infidels

इस्लाम मुसलमानों को काफिरों से दोस्ती करने के लिए सख्त मना करता है क्योंकि इस्लाम के अनुसार काफिर worst Of all Creatures है उनके साथ सिर्फ दुश्मनी ही रखनी चाहिए

3:28

لَّا يَتَّخِذِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ ٱللَّهِ فِى شَىْءٍ إِلَّآ أَن تَتَّقُوا۟ مِنْهُمْ تُقَىٰةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفْسَهُۥ ۗ وَإِلَى ٱللَّهِ ٱلْمَصِيرُ ٢٨

The believers must not take the disbelievers as friends instead of the believers. And whoever does that has no relation with Allah whatsoever, unless you guard yourselves against an apprehension from them. And Allah warns you of Himself and to Allah is the return.

— Maarif-ul-Quran

4:144

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا۟ لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَٰنًا مُّبِينًا ١٤٤

O those who believe, do not take the disbelievers for friends instead of the believers. Do you want to produce before Allah a clear evidence against yourselves?

— Maarif-ul-Quran

हे ईमान वालो! ईमान वालों को छोड़कर काफ़िरों को सहायक मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने विरुध्द अल्लाह के लिए खुला तर्क बनाना चाहते हो?

— Maulana Azizul Haque al-Umari

मोमिनों को चाहिए कि वो ईमान वालों के विरुध्द काफ़िरों को अपना सहायक मित्र न बनायें और जो ऐसा करेगा, उसका अल्लाह से कोई संबंध नहीं। परन्तु उनसे बचने के लिए[और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है और अल्लाह ही की ओर जाना है। [1]

— Maulana Azizul Haque al-Umari

5:51

۞ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلْيَهُودَ وَٱلنَّصَٰرَىٰٓ أَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُۥ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ٥١

O those who believe, do not take the Jews and Christians for intimate friends. They are friends to each other. And whoever takes intimate friends from them, he is one of them. Surely, Allah does not take the unjust people to the right path.

— Maarif-ul-Quran

Allah prohibited His believing servants from becoming supporters of the disbelievers, or to take them as comrades with whom they develop friendships, rather than the believers.

. . .

Allah said next, (unless you indeed fear a danger from them) meaning, except those believers who in some areas or times fear for their safety from the disbelievers. In this case, **such believers are allowed to show friendship to the disbelievers outwardly, but never inwardly**. For instance, Al-Bukhari recorded that Abu Ad-Darda' said, "We smile in the face of some people although our hearts curse them. *Al-Bukhari said that Al-Hasan said, "The Tuqyah is allowed until the Day of Resurrection.*

Tafsir Ibn Kathir

Allah forbids His believing servants from having Jews and Christians as friends, because they are the enemies of Islam and its people, may Allah curse them. Allah then states that they are friends of each other and He gives a warning threat to those who do this"

Tafsir Ibn Kathir

हे ईमान वालो! तुम यहूदी तथा ईसाईयों को अपना मित्र न बनाओ, वे एक-दूसरे के मित्र हैं और जो कोई तुममें से उन्हें मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा तथा अल्लाह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

— Maulana Azizul Haque al-Umari

इस्लाम साफ साफ कहता है कि काफिरों से सिर्फ बाहरी दोस्ती रखो परंतु अंदर से उससे नफरत करो। जिहाद अगर जमीन पर नहीं चल रहा तो मोमिन के दिमाग में अवश्य चल रहा होगा।

Author's Note :-

इस पुस्तक की सारी जानकारी 100% प्रमाणिक है जिसे बेहद Research के बाद लिखा गया है फिर भी यदि आप चाहे तो Cross - Check कर सकते है।
आशा करता हु ये किताब आपका ज्ञानवर्धन करेगी और आपकी Comparative Study को और अच्छा करेगी तथा इसमें दी गई जानकारी आपके काम आयेगी।

बिना बीमारी को जाने उसका इलाज नहीं हो सकता इसी इस्लाम रूपी कैंसर की जानकारी हेतु यह पुस्तक लिखी गई है।

Thanks For Reading